महाभारत से सम्बन्धित सामग्री।

19 (IX) — 0

कोई प्राचीन इतिहास नहीं है। तब फिर यह
कैसा आश्चर्य कि ये जातियां इतनी पुरानी
हुई नहीं? उन का अस्तित्व वे इसी लिये मानते हैं कि
अन्य सूत्रों से उन के अस्तित्व के प्रमाण मिलते हैं।
परन्तु कि वस्तुस्थिति के अस्तित्व के
लिये इतना कहना पर्याप्त है? उस के अस्तित्व के
लिये केवल उल्लेख ही नहीं है, अपितु प्राचीन से प्राचीन
ऐतिहासिक सामग्री अपने को उस की साक्षी में ले आए
हैं। क्या यह कि योरोपीय विद्वानों का यह केवल
दुराग्रह है। इतना स्पष्ट है कि ये सामग्री इतिहास
काल के प्रारम्भ से ही आज के समान विद्यमान
नहीं है, योरोपीय इतिहास भी यह मानते हैं
कि इतनी उन्नति उन्हों ने अवश्य ही अल्प
ही थी। अस्तु

अतः आँ वस्तुस्थिति को समझने के लिये हमें
कुछ भी विचार है, उस के सम्बन्ध में जो भी सामग्री
उपलब्ध है, वह अध्ययनीय अवश्य है। वह न
केवल अन्य देशों के समूहों के विकास के इतिहास
का अध्ययन करती है, प्रत्युत उस विकास के
सहस्रपूर्व अंग का सर्वांगपूर्ण चित्र भी हमारे सामने
उपस्थित करती है। पाठक भी देखें —

OM.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज़ मय नाप व तौल
Design of paper together with size and weight. _____

क़ीमत Cost _____

पेशगी Advance _____

मूफ़ चाहिये या नहीं
Proof wanted or not? _____

ता० मूफ़ भेजने की
Date on which the Proof required. _____

कब तक चाहिये
Date when required. _____

किस तरह फ़ार्म भेजे जावें
How the work may be despatched _____

हस्ताक्षर फ़ार्म छपाने वाले के
Signature of customer _____

ता० Date _____

ओ३म्

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज़ मय नमूना वज़न
Designed paper together with size and weight. _____

कीमत Cost _____

बेशगी Advance _____

प्रूफ़ चाहिये या नहीं
Proof wanted or not? _____

ता० प्रूफ़ भेजने की
Date on which the Proof required _____

कब तक चाहिये
Date when required. _____

किस तरह फ़ार्म भेजे जावें
How the work may be despatched _____

हस्ताक्षर फ़ार्म छपाने वाले के
Signature of customer _____

ता० Date _____

ॐ

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

मान्यवर महोदय Dear Sir,

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज समय नाप व तौल } Design of paper together with size and weight. } _____

कीमत Cost _____

बेबाकी Advance _____

प्रूफ चाहिये या नहीं } Proof wanted or not? } _____

ता० प्रूफ भेजने की } Date on which the Proof required. } _____

कब तक चाहिये } Date when required. } _____

किस तरह फार्म भेजे जावें } How the work may be despatched } _____

हस्ताक्षर फार्म छपाने वाले के } Signature of customer } _____

ता० Date _____

అ ఆ ఇ ఈ ఉ ఊ ఋ ఌ ఎ ఏ
అ ఆ ఇ ఈ ఉ ఊ ఋ ఌ ఎ ఏ

ఐ ఒ ఓ ఔ క ఖ గ ఘ ఙ
ఐ ఒ ఓ ఔ క ఖ గ ఘ ఙ

చ ఛ జ ఝ ఞ ట ఠ డ ఢ ణ
చ ఛ జ ఝ ఞ ట ఠ డ ఢ ణ

త థ ద ధ న ప ఫ బ భ మ
త థ ద ధ న ప ఫ బ భ మ

య ర ఱ ల ళ ఴ వ శ ష స హ ళ క్ష
య ర ఱ ల ళ ఴ వ శ ష స హ ళ క్ష

కం కా కి కీ కు కూ కృ కౄ కె కే కై కొ కో కౌ క్ కం కఁ
కం కా కి కీ కు కూ కృ కౄ కె కే కై కొ కో కౌ క్ కం కఁ

కఁ కౢ కౣ
కఁ కౢ కౣ

క్వ క్ష క్ష క్ష క్ష క్ష క్ష క్ష క్ష క్ష క్ష క్ష క్ష క్ష క్ష
క్వ క్ష క్ష క్ష క్ష క్ష క్ష క్ష క్ష క్ష క్ష క్ష క్ష క్ష క్ష

ఉచ్చారణ.

అ ా ి ీ ు ూ ృ ౄ ె ే ై ొ ో ౌ ం ఁ ఄ ఽ ్ ౕ ౖ
అ ా ి ీ ు ూ ృ ౄ ె ే ై ొ ో ౌ ం ఁ ఄ ఽ ్ ౕ ౖ

తెలుగు బళ్లు
ఇల్లు
ఇల్లు
ఇల్లు

ओ३म्.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज मय नाप व तौल Design of paper together with size and weight. _____

कीमत Cost _____

पेशगी Advance _____

प्रूफ चाहिये या नहीं Proof wanted or not? _____

ता० प्रूफ भेजने की Date on which the Proof required. _____

कब तक चाहिये Date when required. _____

किस तरह फार्म भेजे जावें How the work may be despatched _____

हस्ताक्षर फार्म छपाने वाले के Signature of customer _____

ता० Date _____

ज्ञान साधन

भौगोलिक
उ.प. मध्य दक्षिणी

1. पंजाब, सिंध, राजपूताना (मरु) उत्तर-पश्चिम यू.पी. धौलपुर, इन्दौर, बनास, पूर्वी चित्तौड़, छोटा नागपुर, जबलपुर, मध्यप्रदेश का तटीय भाग, सतपुड़ा, अरावली, दांतेवाड़ा, सिंचनापल्ली, कच्छ काठियावाड़ के मरुस्थल, 4 से 12 इंच वर्षा, 2 इंच से 20 इंच ऊंचे।

2. गंगा-मैदान, बंगाल, उत्तर-पूर्वी असम, उत्तर पूर्वी सिंध, काठियावाड़ व कच्छ के चौड़े भाग, पूर्वी पंजाब, हिमालय के नीचे।

3. पश्चिम, दक्षिण व पूर्व के किनारे के भाग, मध्य यूरोप, U.S.A. कैलिफोर्निया के चारों ओर का भाग, अंडमान द्वीप, न्यूजीलैंड, अर्जेन्टाइना का पूर्वी भाग, चिली, दक्षिण अफ्रीका के केप प्रदेश, ऑस्ट्रेलिया के दक्षिण पश्चिम भाग, 20 से 40 इंच वर्षा, घने जंगल, ऊंचे वृक्ष, सदाबहार वृक्ष।

4. अफ्रीका के तटीय भाग व कांगो बेसिन, 40 से 60 इंच वर्षा, घने जंगल, सदाबहार वृक्ष।

5. अफ्रीका के मध्य भाग, दक्षिण अमेरिका, 60 से 200 या अधिक वर्षा, घने जंगल, सदाबहार वृक्ष।

6. मध्य अमेरिका, वेस्टइंडीज, फिलीपाइन, मलेशिया, इंडोनेशिया, 200 इंच वर्षा, घने जंगल, सदाबहार वृक्ष।

- पंजाब के समकक्ष पहाड़ियों में मनुष्यों के प्रमुख केन्द्र नागपुर, शिलांग, शिवचिरि हैं।
- सिमला के अधिक सिंचाई हुआ है।
- हिमालय का पहला उत्थान 3 करोड़ वर्ष पूर्व, दूसरा 2 करोड़ वर्ष पूर्व, उस पर अनेक प्राणी हिले के पशु, पक्षी। इसी दूसरे उत्थान हुआ। 2 लाख वर्ष पूर्व तीसरा या अन्तिम उत्थान हुआ।
- 2 लाख वर्ष पूर्व के हिम काल में ही दक्षिण अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अमेरिका में हिमपात केवल पहाड़ों पर ही हुई थी।
- नर्मदा का मैदान 2 लाख वर्ष के मनुष्य कृत पाषाण औजार मिले हैं। अफ्रीका, दक्षिण में बस्तियां थी व पहाड़ों में गुफाओं में।

ओ३म्.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज मय नाप व तौल
Design of paper together with size and weight. _____

कीमत Cost _____

पेशगी Advance _____

भूफ चाहिये या नहीं
Proof wanted or not? _____

सा० भूफ भेजने की
Date on which the Proof required. _____

कब तक चाहिये
Date when required. _____

किस तरह फार्म भेजे जावें
How the work may be despatched _____

हस्ताक्षर फार्म छपाने वाले के
Signature of customer _____

सा० Date _____

ज्योतिष

ज्योतिष ग्रन्थों में उन २ ग्रन्थों के उनमें जो अपने २ समय की अथवा दूसरों से सम्बन्ध की ग्रह स्थिति बताई है, मुख्यतः संवत्सर (सम्) या सूर्य के उत्तरायण में जाने के समय विषुव पर होने का सम्बन्ध देखा है, उस के अनुसार भिन्न २ घटनाओं, व्यक्तियों व ग्रन्थों का काल निश्चित किये जाने का अनुसरण किया जाता है। यहां संक्षेप से यह बताना आवश्यक है कि ज्योतिष के अनुसार एक राशि अथवा एक भाग पर वसन्त सम्पात प्रायः २००० वर्ष तक रहता है और फिर विलोम गति से पिछली राशि पर हटता जाता है। अतः

१. शुक्ल यजुर्वेद की उत्पत्ति के समय वसन्त सम्पात धनिष्ठा के अर्थात माघ शुक्ल १ को प्रातः सूर्योदय के समय होता था - अर्थात प्रायः १५०० वर्ष ई० पूर्व

२. ब्राह्मण ग्रन्थों के रचना काल में फिर उसी विषुव का — अर्थात २००० ,, ,, चैत्र वैशाखी.

३ बोधायन सूत्र के निर्माण समय फाल्गुनी में. २५०० ,, ,,
"मेष, वृषयो वसन्तः।" (कात्यायने श्रौतसूत्रे पृ: 33)

४. अन्य सूत्रों के ,, ,, ,, फाल्गुन चैत्र में २५०० ,, ,,

५. सुश्रुत संहिता व वेदांग ज्योतिष - माघ - श्री. २३०० ,,
"वसन्ते कुसुमसमये:।" (भट्टोत्पल कृत बृहत्संहिता पृ. 36 में उद्धृत)

६. आर्य संहिता . . . पौष - माघ . २९०० ,,

७. ज्योतिष सिद्धान्त . . मार्गी. पौष . १९०० ,,

८ वर्क्षाचार्य . . आश्वि. कार्ति १६०० ,,

९. पौलिश सिद्धान्त व गार्गसंहिता आश्वि. कार्ति ११५० ,,

(आज १९४६ ई० ८२०१ वर्ष) ५३३५ ,,

ओम्.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज़ मय नाप व तौल़ Design of paper together with size and weight. _____

कीमत Cost _____

बेशगी Advance _____

प्रूफ़ चाहिये या नहीं Proof wanted or not? _____

ता० प्रूफ़ भेजने की Date on which the Proof required. _____

कब तक चाहिये Date when required. _____

किस तरह फ़ार्म भेजे जावें How the work may be despatched _____

दस्तख़त फ़ार्म छपाने वाले के Signature of customer _____

ता० Date _____

वेदांग ज्योतिष में नक्षत्रों के देवता

अश्विन, यम, अग्नि, प्रजापति, सोम, रुद्र, अदिति
(अश्विनी, भरणी कृत्ति. रो. मृग. आर्द्रा. पुन.)
बृहस्पति. सर्प. पितृ: भग: अर्यमन. सविता
(पुष्य. आश्ले. मघा. पू.फा. उ.फा. हस्त)
त्वष्टा. वायु. इन्द्राग्नि, मित्र. इन्द्र निर्ऋति
(चित्रा. स्वाति, विशाखा, अनु. ज्ये. मूल.
आप: विश्वेदेव. विष्णु. वसु. शतभ. अजैकपद.
(पू.भा. उत्ताभा. रेवती. अश्विनी. भरणी. पू.भा.)
अहिर्बुध्न्य पूषा.
उ.भा. रेवती.

प्राचीन ज्योतिष ग्रन्थ

सबसे पहले "पैतामह सिद्धान्त"
(वेदाः लहु समुद्भूतं वेद-चक्षुः सनातनम्
लहुत्वं नेह मन्यन्तं स्मृतवान स पितामहः
तेन पैतामहं ज्ञानं प्राप्तं तच्छुचिना समासतम्
वासिष्ठं च वसिष्ठेन पुत्रायोप्य उदाहृतम् .)

2 वसिष्ठ सिद्धान्त
3. रोमक सिद्धान्त
4. पौलिश सिद्धान्त
5. सूर्य सिद्धान्त

वराहमिहिर ने लिखा है कि पैतामह और वसिष्ठ का गणित बहुत प्राचीन होने के कारण समय अनुरूप नहीं होगया है।

भारत ने अरब से चीन तक के देशों को ज्योतिष दिया है (पंचसिद्धान्तिका)

OM.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज मय नाप व तौल
Design of paper together with size and weight. _____

कीमत Cost _____

बेशगी Advance _____

प्रूफ चाहिये या नहीं
Proof wanted or not? _____

ता० प्रूफ भेजने की
Date on which the Proof required. _____

कब तक चाहिये
Date when required. _____

किस तरह फार्म भेजे जावें
How the work may be despatched _____

हस्ताक्षर फार्म छपाने वाले के
Signature of customer _____

ता० Date _____

माह नाम	तैत्तिरीय संहिता में	ऋक्
मधु -	चैत्र	चित्रा
माधव —	वैशाख	विशाखा
शुक्र -	ज्येष्ठ	- अनुराधा
शुचि -	आषाढ	पूर्वाषाढा-उत्तराषाढा
नभ -	श्रावण	श्रविष्ठा-शतभिषक्
नभस्य —	भाद्रपद	पू. भा.
इष -	आश्विन	अश्विनी
ऊर्ज —	कार्तिक	कृत्तिका
सह -	मार्गशीर्ष	मृगशिरा
सहस्य —	पौष	पुष्य
तप —	माघ	मघा
तपस्य	फाल्गुन .	उ. फाल्गुनी

मधुश्चमाधवश्च वासन्तिकावृतू - १३.२५

शुक्रश्चशुचिश्च ग्रैष्मावृतू । १४-५

नभश्चनभस्यश्चवार्षिकावृतू । १४-१५

इषश्चोर्जश्च शारदावृतू । १४-१६

सहश्चसहस्यश्चहैमन्तिकावृतू । १५-२४

तपश्चतपस्यश्च शैशिरावृतू । १५-२५

(वाजसनेयसंहिता)

तत्रपूर्वौ हे वासन्तिकौ, मध्यन्दे गीतास्पं अपरौ हे ग्रैष्मौ: पूर्वाह्णे वार्षिकौ, शारदौ मध्यरात्रे हैमन्तिकौ सुप्तलक्षणौ एवमहोरात्रमपि वर्णितम्

पृ. सुनर्कृतसंहिता पृ. ४७

ओम्.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

माप Size _____

किस्म कागज मय नाप व तौल
Design of paper together with size and weight. _____

कीमत Cost _____

बेशगी Advance _____

प्रूफ चाहिये या नहीं
Proof wanted or not? _____

ता० प्रूफ भेजने की
Date on which the Proof required. _____

कब तक चाहिये
Date when required. _____

किस तरह फार्म भेजे जावें
How the work may be despatched _____

हस्ताक्षर फार्म छपाने वाले के
Signature of customer _____

_____

ता० Date _____

दिति एवं दूरीय (अदिव कायाएं) या, उनमें रहने वाले

दिव, पृथिवी, पृथ्वी (ऋ. २.१५.२
द्यौ पृथ्वी अंतरिक्ष (१०.५५३.
नाक (दिव या आदित्य निघंटु १.४.)
परमव्योम (बृहदारण्यक ऋ. ४.४०.५
३ अन्तरिक्ष, ३ लोक, ३ रोचन, ३ दिव,
और ३ पृथिव्यां । ४.२३.२.
३ नाकानें, ३ आपः (जल का समुद्र) ३.दिव.
३.२६.५
३ भूमि आकाशिनी । ८.४१.५

द्या - दिव आपः और पृथ्वी का उत्पादक । १०.१२१.१
द्यौ और नाक (Sweden Norway) (१०.१२१.५)
इन्द्र पानी के द्वारा पृथ्वी और दिव का शासन करता है,
नाक के द्वारा शोक को देव हटाते हैं । यहां लोक का प्रयोग
सदा बल हटाते । १.३४.८, ३.२.१२, १.१६.६.
१.५८.२
बहुत दूरी पृथिवियों का शासक है । ७.८८.२
८ दिशाएं । १.३५.८.
अदिति के गर्भ में दिव और दिति की अदिति है (ऋ
वे । ५.२.११
दीर्घतमा कहते हैं कि बहुत-सित अदिति ही (ऋ.
करते हैं, जिसका एक बल इन्द्र ने अधिकार में
किया । ७.१८.८
अदिति नमस्कार है
अदिति देवों को बनाती है । १०.७२.५
अदिति पुत्र - मित्र, वरुण, ५, ५ भ्रातृ ४, ८.२५.३,
अर्यमन् ७.५०.२, ८.४७.६, अंश ४.४४.२
इन्द्र ५.२८.४ सोम (पितर) ६.५८.३

ओम्.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

फ़िरम काग़ज़ मय नाप व तौल
Design of paper together with size and weight. _____

क़ीमत Cost _____

बेशगी Advance _____

प्रूफ़ चाहिये या नहीं
Proof wanted or not? _____

ता० प्रूफ़ भेजने की
Date on which the Proof required. _____

कब तक चाहिये
Date when required. _____

किस तरह फ़ार्म भेजे जावें
How the work may be despatched _____

हस्ताक्षर फ़ार्म छपाने वाले के
Signature of customer _____

_____

ता० Date _____

अदितिर्हे ८ पुत्र / १०.७२.८ सात पुत्र. ऋ. १२४.
८ नाम नहीं; ऋ २.२७ में मित्र, वरुण, अर्यमन् ८ के
अंगों अंश के नाम हैं। पैंगे लिखता है, २१ जगह
मित्र ६ जगह, वरुण व अर्यमन ८.८. जगह, धातु
८ जगह, तत्व ५ जगह, त्वष्टृ २ जगह, रुद्र १
जगह, विवस्वत ३.३ की, अंशिक नहीं
और ब्रह्मणस्पति २-२ बार, दक्ष, अंश, अदिति
नाम सूक्त का, सूर्य, बृहस्पति, आप:, पर्वत
देवता एक २ का अदितिपुत्र कहे गए हैं।

शतपथ में आदित्यों की संख्या ७ है (३.९-३.३
कि ८ है। नाम - मित्र, वरुण, धातृ, अर्यमन, अंश
अंश, चन्द्र, विवस्वत

तैत्तिरीयारण्यक और बृहदारण्यकोपनिषद में
मित्र और एतरेय सिद्ध २ भागों है दूसरी है आदित्य कहा
है। सिद्धान्त में १२ मास के १२ आदित्य कहे हैं।
महाभारत में बारह कहे हैं परन्तु नाम नहीं हैं - विवस्व
पर्जन्य, दूषण और मनु। ३३ २ इन्द्र और विवस्वत
भी बताये हैं।
विष्णु पुराण में ८ हैं जिन में एक शक्र है।

एकता, द्विता, त्रिता (तत्वार्थ) - त्रित ने इन्द्र को वृत्र के
विरुद्ध सहायता दी और विश्वरूप को मारा। मरुत् ने भी
मदद की। वह सोम तथा करता था। १.१८७.२, ८.७.२४,
१०.४८.२, २०.८.८. वत्स की प्राप्ति तोड़ी। १.५२.५
तीनों प्राचीन काल में ऋषि थे। ऋग्वेद में भी
द्विता आप्त्या: आया है। (८.१०३) तैत्तिरीय संहिता,
वाजसनेयी सं. १.२३ शतपथ १.२.३.१ में भी १.८. के
आते हैं। तैत्तिरीय में (१.५८.६५) भी त्रित
पुत्रों का उल्लेख है। तैत्तिरीय ने ब्रह्म ३ के

ओम्.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

माप Size _____

किस्म कागज मय नाप व तौल Design of paper together with size and weight. _____

कीमत Cost _____

बेशगी Advance _____

प्रूफ चाहिये या नहीं Proof wanted or not? _____

ता० प्रूफ भेजने की Date on which the Proof required. _____

कब तक चाहिये Date when required. _____

किस तरह फार्म भेजे जावें How the work may be despatched _____

हस्ताक्षर फार्म छपाने वाले के Signature of customer _____

ता० Date _____

हिरण्यदत्त का
त्रित के 3 सिर और 6 आंखें थीं और एक कान था। ऋ. 10.8.
वे 10.88.6. त्रित ने उसे मारा।

पुरुकुत्स का पुत्र
पुरुकुत्स जब दैत्य को दिया गया तब सप्त ऋषि ने शपथ
खायी गए। पुरुकुत्स को त्रसी ने इस वरुण से त्रिसे यह
दिया और उन्हों ने उसे पुत्र- त्रसदस्यु दिया। 4.42.8-9
इस से त्रसी का बाल (10.88.3-4) सुकक्ष (1.8.3)
उस की लोहे की गाड़ी में 20 घोड़े जुतते हैं। (1.1648.6, 1.1660.1)
शतपथ- इस प्रजापति से उत्पन्न हुआ।

इस ने सूर्य बनाया (2.40.12)
ऋभु - सुधन्वा के पुत्र हैं (1-110.2, 3.60.2, 4.34.7)
मनुपुत्र और आदित्यभी (3.60.3 व 8.27.12)
ऋभु तीन हैं - ऋभु, विभु, वाज। (1.161.6)
ऋतु - (प्राण) सूर्य ऋतु का पुत्र है। 2.30.8
संवत्सर 12 ऋतुओं से मिलकर बनते। (6.103.6
यह संवत्सर 1/2 अर्थ में बड़ा था। यह अर्थ श्री. गुरु
में किया जाने लगा। Studies in Rgvedic Deities
By Ekendranath Ghosh
(Journal of the Asiatic Society of
Bengal N.S. 28 1932.)

अलंकार की मूर्ति कॉलिलोन, ग्रीस की अकेर्न - बेक्रो
क्लिप, अगले दोनों पैर उठाए खड़ा - इन दोनों पर दो तो,
सिर पूंछी अजगर, नीचे मछली का सांप के आकार में
उलटा अजगर (मत्स्य मकर) इसी लिये वृत्र वैदिक
सिद्धान्त में अजगर कहा है।
पहले पूर्वा फाल्गुनी का देवता अर्यमा माना जाता था।
ब्राह्मण काल में प्रजापति अर्यमन माना जाने लगा।

ओ३म्.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज़ मय नाप व तौल
Design of paper together with size and weight. _____

कीमत Cost _____

बेशगी Advance _____

प्रूफ़ चाहिये या नहीं
Proof wanted or not? _____

ता० प्रूफ़ भेजने की
Date on which the Proof required. _____

कब तक चाहिये
Date when required. _____

किस तरह फ़ार्म भेजे जावें
How the work may be despatched _____

हस्ताक्षर फ़ार्म छपाने वाले के
Signature of customer _____

ता० Date _____

पितृलोक नीचे है। शत. १४-६-१.१०
उस का दरवाजा दक्षिण पूर्व-कोण में है। शत. १३.८.१.५
तीन तरह के पितृ - सोमवन्तः, बर्हिषद, अग्निष्वात्ताः
(शत. ५.५-४.२८, १४.१.३.२४) मघा नक्षत्र
बृहत्संहिता सिद्धान्त.
मनुष्य, गण - मघा है स्वामी पितृ.
यम से सम्बंध में मृत्यु-देवता का पर्यायवाची सम्बन्ध.
छोटे काले प्रायः एकसूत्र और संख्या ६ वें या १०वें मंडल में हैं; जो अनुवर्ती हैं कहे हैं।

ऋ.
ऋ वेद में - ऋ ५.४१.२ बार १.१२.४-५ दृषद्.
२.३३.४-७-८-१३. (जौ, गेहूँ आ) अम्बर ७.६६.१२
उस की लता अश्मन्तिः ८.१०१.५. ३.४८.६०
वाजसनेयी संहिता में —
पशुपति ६.३२ वे ६.३८.
ऋ की वाणी - अग्निवृत. ३.५८
अम्बरे दे दमूने ३.६१. मनु ऋषियों में निवास. १६२.३५
दृषद्वान. ३८.६ नीलग्रीव १५.२८ मरुद्देव ३८.८
शर्व. १५.२८, ३८.८. शिपिविष्ट १५.२८
अवयुद्ध दक्षिण देश के स्वामी.
शर्व का पृथ्वी के नीचे रहने में और अन्तरिक्ष
में / १६.५५, १६.५७.
अथर्ववेद - ऋग्वेद (A) उस के संकलन में (१५.५.२८
पशुपति परिवार के (१५.५.६) भव मूर्धा १५.५.१
शतपथ में - अश्वपति, दृषद्वान, उग्र, शुष्म, पशुपति,
भव, मनुष्यदेव, रुद्र, शर्व (५.१.३.१४)
ब्रा. ग्रन्थों में ये केवल देवता रह गए हैं।
महाभारत में - गृत्समद, सर्व, नैऋति, अजैकपाद,
अहिर्बुध्न्य, पिनाकिन, ईश्वर, कपर्दिन, स्थाणु,
भग और रुद्र ९.६६.२-३
साध्य और वसु एक साथ रहते हैं। अथर्व १०.१०.३१
८ वसु - अग्नि, वायु, भूमि, आकाश, आदित्य, द्यौ,
चन्द्र और नक्षत्र - शत १९.६.३.६.

OM.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

वादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज मय नाप व तौल
Design of paper together with size and weight. _____

कीमत Cost _____

बेबाकी Advance _____

प्रूफ चाहिये या नहीं
Proof wanted or not? _____

ता० प्रूफ भेजने की
Date on which the Proof required. _____

कब तक चाहिये
Date when required. _____

किस तरह फार्म भेजे जावें
How the work may be despatched _____

हस्ताक्षर फार्म छपाने वाले के
Signature of customer _____

ता० Date _____

महाभारत द्यानपर्व में - धा, ध्रुव, सोम, सावित्र, अनिल,
अनल, प्रत्यूष और प्रभास ।

भागवत में - द्रोण, प्राण, ध्रुव, अर्क, अग्नि, दोष, वास्तु,
विभावसु ।

कूर्मपुराण - आप, ध्रुव, सोम, धा, अनिल, अनल
प्रत्यूष और प्रभास ।

पुराण. घुंघाकेका च. मे. ६.५५.२ डाढ़ी. १०.२६.१.
दाहिने हाथ में दंड ६.५४-१०. कटिवस्त्र १०.२६.६
सुनहली आभा १.४२६ कटिवस्त्र एवं ५.५६.२-३
उत्तरीय में बड़ी जुलतें ६.५५ से ६.५७.३
यह सूर्य का दूत है ।

पौलस्त्यवध - अतलांत कैलास पुत्रियों (पहाड़)
पुलस्त्य इन का अभिभावक था । ये अप्सराएँ
महत्व - पुष्टि में गड़े हुए ।
ब्राह्मण ग्रन्थों में भी देवताई है
गए ।
नोट - ई. ४७ और ई. ७५ अनुवाद के सिद्धांत ।
इन्हें ने इलीविशन का गढ़ तोड़ा । १. ३३.१२
" " इन्द्र, तुग्र, पृतना, दशग्व, दशोनि की
सेनाएँ इन्हें ने आर्यों के दिए. ६.२०.८
और तुग्र एवं स्मद्दिता है, पुत्र है आर्यों ६.४६.४
उर्ण - इन्द्र ने ६६ दिवे उर्ण के तोड़े (२.४.४.)
२.२१.१६
आर्यकाल
वध्यश्व १०००० सेना सहित अंशुमती तट पर था । ६.८.६
धुनि (Oa) नदी. २.१४.४, २.३०.२, ४.८७.३.
दास राजा - पशु चुराए (१०.६२.१०) पशुधन अपार

ओम्.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज मय नाप व तौल
Design of paper together with size and weight. _____

कीमत Cost _____

बेशगी Advance _____

प्रूफ चाहिये या नहीं
Proof wanted or not? _____

ता० प्रूफ भेजने की
Date on which the Proof required. _____

कब तक चाहिये
Date when required. _____

किस तरह फार्म भेजे जावें
How the work may be despatched _____

हस्ताक्षर फार्म छपाने वाले के
Signature of customer _____

ता० Date _____

1- पुराणों व महाभारत का उपन्याय अंगे के पाठकों के मन
मानने वालों के लिये विचारणीय बात यह है कि
साहित्य में इसे प्रेरणा वर्तमान समाज का चित्रण हुआ
करता है। कोई रचनाकार अतीत को ही कल्पना में
ले, परन्तु वह कल्पना भी किसी न किसी मान्यताओं
को लेकर हुआ करती है। समाजवादी विचारों का दार्शनिक
पं. जवाहर की राज्य क्रांति के पूर्व से ही होने पर भी
दुष्यन्त ने व्यवहारिक रूप में कल्पना सर्वप्रथम
के पहले हिन्दी के साहित्य में नहीं आई। दूसरी ऐसी
रचनाओं में कल्पना स्वयं भी उस समय की सभ्यता
और तत्कालीन समाज के विकास की ही प्रतीक
होती है। जैसा दृश्य होता है, वैसा ही तो चित्र होता
है, अतः यदि इन रचनाओं को कल्पना भी मान
लिया जाय, तो भी वे कहीं तो प्रकाशित होती
हैं कि उस की कल्पना उस के समय के समाज
से किंचित ही आगे बढ़ी हुई होगी। अन्यथा
उच्चतम सभ्यता और कल्पनाओं से उपकरण ही
इतने विस्तृत और सुव्यवस्थित एवं छोटी से
छोटी सूचनाओं सहित वर्णन और उस के लिये
शब्द कोष कहां से लाते। वेद के अनेक सूक्तों
में जिस विकसित काव्य और रूपकों की छटा के
दर्शन होता है, वह किसी कल्पना से समाज
में तो उड़ता नहीं हो सकती। कि ये कल्पनाएं
हुई हैं तो हिमालय समुद्र सूचने की, जलाशय की,
अर्बुद पहाड़ के जन्म आदि की कथाओं की कथाएं
और कैसे कल्पना करेंगे। यदि इस आधी सुनी
हुई बातें मान ली जाय, तो उस पर कैसा
किसी उन का दूसरी जगह के लिए कल्पित
सामग्री ले कैसे मेल बैठ जाता है। ऐतरेय के
लिये में किस को के अधिकारों से कालों से सूर्य
को सिद्ध। कैसे की कथाएं सुनी, हरिश्चन्द्र और
अन्त की कथाओं का तात्पर्य और सम्बंध

ओम्.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज़ मय नाप व तौल
Design of paper together
with size and weight. _____

क़ीमत Cost _____

बेशगी Advance _____

प्रूफ़ चाहिये या नहीं
Proof wanted
or not? _____

ता० प्रूफ़ भेजने की
Date on which the
Proof required. _____

कब तक चाहिये
Date when
required. _____

किस तरह फ़ार्म भेजे जावें
How the work may be
despatched _____

हस्ताक्षर फ़ार्म छपाने वाले के
Signature of customer _____

_____

ता० Date _____

राजस्थान में रक्त की मुख्य

अर्बुद हो गया। डॉक्टर ने कहा, इस रोग

का इलाज में समुद्र पार ले जाने की बात। पैसों

की कमी आड़े आई।

ओम्.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज मय नाप व तौल
Design of paper together with size and weight. _____

कीमत Cost _____

बेशगी Advance _____

प्रूफ चाहिये या नहीं
Proof wanted or not? _____

ता० प्रूफ भेजने की
Date on which the Proof required. _____

कब तक चाहिये
Date when required. _____

किस तरह फार्म भेजे जावें
How the work may be despatched _____

हस्ताक्षर फार्म छपाने वाले के
Signature of customer _____

_____

ता० Date _____

ओम्.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज मय नाप व तौल
Design of paper together with size and weight. _____

कीमत Cost _____

बेशगी Advance _____

प्रूफ चाहिये या नहीं
Proof wanted or not? _____

ता० प्रूफ भेजने की
Date on which the Proof required. _____

कब तक चाहिये
Date when required. _____

किस तरह फ़ार्म भेजे जावें
How the work may be despatched _____

हस्ताक्षर फ़ार्म छपाने वाले के
Signature of customer _____

ता० Date _____

ऋग्वेद के दीर्घजीवी ऋषि

ऋ. कक्षीवत, ऋषि, प्रजापति

मनुर्वैवस्वत तद्द पूषण ईमे पुत्र प्रचेतसो मनु. ५.२६

शतं शरदः शतं जीवेत् - शरद ऋतु से वर्षा ऋतु तक देखें ३.३६.१०.

देव उशेंगे आगत्य स्थान. देवं शयनी व देव उशती. ३६.२४

गाथिनो वि. ऋषि. ऋ. १.४.१२.

मनु में अन्य कालीन नाम. - ३.८७-६१

यत्रा नः पैतृको यमो यत्रावोधं दिवः ऋ. ९.११३.८

जहां पैतृक यम है, और जिस में दिव (प्रकाश का
ऐक्य व्यवस्था) के लिये कहा गया है।

यत्रामूर्या हतीषत्त्रमाममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परीतपः

जहां अमूः और हतीषत् के मत हैं, उस मद में या छल
में मुझे इन्द्र के लिये अमृत (ज्ञान) रूप दी कृपा करिये।

इसका संबंध इस क्षेत्र में
ही स्थान से दिखाना।

ये पन्थानो बहवो देवयाना अन्तरा द्यावापृथिवी संचरन्ति

ऋषि - ऋषि, जिस पुरा गुहा समुद्र में से उस
सूर्य संज्ञा को पुरुरश्रित आता है, उसी पुरा तुम मुझे
को, उपदेश दो। ऋ. १०.७ २.७.

अथर्व में अतिरिक्त। ई. ३.१-२-३.

व्रात्य का व्रतपते। यजु. २.२४

अथर्व - आ नयैतान् सत्य सुकृतां लोकमपि गच्छतु
पुजानत्। तीर्त्वा तमांसि बहुधा महान्त्यजो नाक मारुक्षतां
तृतीयम्। ई-५.१.

हे व्रतपते, अपने व्रत का आचरण करने वाले पुरुषों को
इस ओर ला। पुण्यात्मा लोकों में भी जा। अज्ञान नाशों
पार को आत्मा ने आरूढ़ हो।

अथर्व - देवा: पितरो मनुष्या गन्धर्वाप्सरसश्च ये
उच्चस्थानजीहो सर्वे दिवि देवा दिविश्रिता ११.५.५.२६

X यजु - शौक्ल यजुर्वेदीय शतपथ ब्राह्मण तथा मैत्रायणी संहिता

(3) याज्ञवल्क्य - काण्व तथा तैत्तिरीय संहिता. ये तीन प्राचीन संग्रह हैं। शतपथ ब्राह्मण के मंत्र 2 में उच्चारित होने का उल्लेख पाणिनी ने भी किया है। तैत्तिरीय में कि अष्टाध्यायी का नाम मिलता है। अग्निहोत्र की केवल अनुक्रमणिका मिलती है। तैत्तिरीय का मुख्य विभाग दर्शपूर्णमास का वर्णन करते हैं।

डा. ए. वेबर ने जो संग्रह (सन् १८७१-७२) प्रकाशित किया है उससे स्पष्ट है कि काण्व मैत्रायणी की तैत्तिरीय तो मिलती जुलती है, परन्तु वाजसनेयी संग्रह भिन्न है।

शौक्ल यजुर्वेद में पहले १८ अध्याय (अध्याय की अनुक्रमणिका में ऐसा लिखते हैं) की अनुक्रमणिका है जिसमें दर्श से ३५ तक के अध्याय 'शिव' अर्थात पौरोहित्य - यज्ञ के जोड़े हुए हैं। अन्त्य उपसद अग्निहोत्र का समर्थन करते हैं। २५ से २८ अध्याय तक के मंत्रों के पिछले भागों की क्रियाओं से सम्बन्ध है। ३० से ३५ तक में नए यज्ञों सर्वमेध, पितृमेध आदि का वर्णन है। ४० वें को अन्य भागों से विशेष सम्बंध नहीं। इस का रूप उपनिषद जैसा है। ९ से १६ वें अध्याय में तंत्र के अनेक विशेषण दिये हैं। किन्तु ३० में दो नए विशेषण हैं - ईशान वसुदेव। 30 वें में भिन्न प्रकृतियों का वर्णन है। इन में से पिछली छः १५ वें में हैं नहीं।

अर्थात शुक्ल यजु ४ भागों में बना। शुक्ल यजु मूल १८ इन में A दूसरे ८ सबसे प्राचीन। शेष १४ इस के बाद विकसित हुए हैं। कि १८ तक के इन की विस्तार में। कि 30 से ३५ तक। ४० का सबसे पीछे - आदि - बाद के युग के।

१ से १० तक नैत्तिरीय आदि की सिद्धान्त में आ चुके अग्नि का उल्लेख है। (अध्याय ८-८) में आ हुए। ११ से १८ तक में विशेष सामंजस्य। तैत्तिरीय के मुख्य यजु (जुहोमि) में शुक्ल से लोकमान्य आदि में बोलने के मंत्र मिलते हैं।

उमा, विदेशी, शिवा, स्वाहा, दिशा, दीक्षा, मेदिनी।
इनके पुत्र- शनि, शुक्र, मोहितांग (मंगल), कामदेव, स्कन्द
सर्ग, बुध

विवाह हुए - दक्षपत्नीश, सौम्य, शान्त, शक्ति
इनकी पुत्री - मैना

कौशिक वंश, पुरुवंश की शाखा - कुकुर, भजमन, शाकीद,
आदि।

तुर्वसा नाम पहले रूप में आदित्यों का हुआ।

OM.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

माप Size _____

किस्म कागज मय नाप वजन
Design of paper together with size and weight } _____

कीमत Cost _____

बेबाकी Advance _____

प्रूफ चाहिये या नहीं
Proof wanted or not? } _____

ता० प्रूफ भेजने की
Date on which the Proof required. } _____

कब तक चाहिये
Date when required. } _____

किस तरह फार्म भेजे जावें
How the work may be despatched } _____

हस्ताक्षर फार्म छपाने वाले के
Signature of customer } _____

_____

ता० Date _____

सामवेद के - मुख्यतः सोमयाग सम्बंधी मंत्र हैं। वे
गाये : एक ऋचवेद है
यजु के - एक लाख मंत्र हैं। अधिकांश - ऋक के मंत्र
ब्राह्मणों में एक चौथाई ऋक है। आधा गद्य में
यजु व उसके ब्राह्मणों का। कुछ स्वतंत्र यजुर्वेदीय ऋचिएं
हैं" —
- ऋग्वेद में प्रजापति का सूक्ष्म उल्लेख, यजु में विष्णु का,
अथर्व में रुद्र - यजु में शिव। हिरण्यगर्भ महादेव की
धृत का वर्णन यहां के नीचे के सूक्तों में।
के विशेष कुल ३ दाढ़ी लघु संख्या गुरु का धनी थे।
ब्राह्मण में यज्ञ संस्था विशेष
सामवेद में १२४९ मंत्र। पहले लाख के ६ प्रपाठक, इनमें से
५ में प्रत्येक में १० दशत के छठे में ९ हैं। पहले १२ दशकों
में अग्नि पवमान। इस के बीच १० दशतों में सोम पवमान
बीच के २५ में इंद्र का आह्वान।
- दूसरे लाख के (चला नीचे हुई हैं। इस में ऋक के मंत्रों के
परिवर्तन भी किया गया है।
- यों तीनों ब्राह्मण के अनुसार यजुर्लाख के ऋक के ईतिवृ
"तत्वारिचा गायित्रियां वेदो" - थे।
- मैत्रायणी की (यजु) संहिता शाखा के लोग अब भी अधिकांश
आंध्र में वे. के पास पाए जाते हैं।
- अथर्ववेद में ब्रह्म ज्ञानियों का वर्णन है, वे गोदावरी तट पर पाए
जाती हैं।
- यजु में देव-दानव युद्ध के वर्णन विशेष हैं। विष्णु का
महत्व अधिक बढ़ा है।
- ऋक में सब देवों को प्रसन्न करने का साधन, यजु में किसी
कुछ यज्ञ। ॐ का प्रयोग अधुत। प्रत्येक प्रार्थना अंत यज्ञ
का विशेष उल्लेख। इंद्र ने दैत्यों को अनेक का उपाय। (मैत्रायणी
में) संख्यों अंक यज्ञों द्वारा फल (ऋक के नहीं, यजु में हैं)।
- अथर्व के पहले १ अंक से ही। शेष ५ अंक बीच में
अंक अधिकांश में अंक ही पीछे। शेष ५ अंक बीच में
- ब्राह्मण के अनुसार अथर्व तथा तैत्तिरीय शाखा के
उस में अथर्व का उल्लेख है।

ओ३म्.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज मय नाप व तौल
Design of paper together with size and weight. _____

कीमत Cost _____

बेशगी Advance _____

प्रूफ चाहिये या नहीं
Proof wanted or not? _____

ता० प्रूफ भेजने की
Date on which the Proof required. _____

कब तक चाहिये
Date when required. _____

किस तरह फ़ार्म भेजे जावें
How the work may be despatched _____

दस्तखत फ़ार्म भरने वाले के
Signature of customer _____

ता० Date _____

अथर्ववेद के लिए अथर्वाङ्गिरस के अलावा अथर्वांगिरस और
'ब्रह्मवेद भी'

अथर्ववेद - इसका प्रयोग पहले पहल मुण्डक उपनिषद में, फिर अथर्वविद्
अर्थात अथर्ववेद जानने वाले ब्राह्मणों के लिए हुआ है।
वेदों के ब्राह्मणों में नहीं है। तैत्तिरीय में रक्षा, शान्तिपाठ में
अनेक बार। शुक्ल यजुर्वेद के कात्यायन श्रौतसूत्र में भी अथर्ववेद के
विनियोग सूत्र में मिलते हैं। ऋग्वेद के गोपथब्राह्मण में
अथर्वाङ्गिरस में जादू आदि के द्वारा अथर्ववेद को वेदों से दूर करने का प्रयत्न
— पर बाद में उसे पीछे जुड़ा। अथर्ववेद के विषय अधिक नहीं
सिर्फ संक्षेप में। विष्णुस्मृति में 6 ब्राह्मणों के
अथर्ववेद के मूल (मन्त्र) सम्बन्धी संज्ञों का पाठ भी है।
मनुस्मृति में शत्रु - शत्रुओं के विरुद्ध उपयोग करने के लिये
अथर्व ब्राह्मणों के योग्य कहा है।"

— पंचविंश ब्रा. औपनिषद ब्रा, औपनिषदी ब्रा. (या शांखायन ब्रा)
पीछे के हैं। पंचविंश ब्रा, तैत्तिरीय ब्रा. और गोपथ ये पृथक
पुस्तिकाएँ प्राचीन हैं। भाषा व कथा दृष्टि / शतपथ, गोपथ
से भी प्राचीन का/

OM.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज मय नाप व तौल
Design of paper together with size and weight. _____

कीमत Cost _____

बेशगी Advance _____

प्रूफ चाहिये या नहीं
Proof wanted or not? _____

ता० प्रूफ भेजने की
Date on which the Proof required. _____

कब तक चाहिये
Date when required. _____

किस तरह फार्म भेजे जावें
How the work may be despatched _____

हस्ताक्षर फार्म छपाने वाले के
Signature of customer _____

ता० Date _____

स्वायम्भुव,

मनु - स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष हुए चुके। अब

वैवस्वत - अर्थात् ७ वां मनु मुगी ७२ इक्ड़ा वर्ष बीत चुके 38

१२०००
७१
१२०००
८४०००
८४२००३
२४४८००

८४२०००
७
५९९२००६
७२०००
५९८४०००

५९८४०००
२४४८०००
२६२८०००

१ स्वायम्भुव पुत्र - पाण्वत और नुश्रिता तथा

२ स्वारोचिष .. - दिग्पश्रित . इन्द्र अर्ज ऊर्ज: . तम्ब:
प्राण: दम्भोलि: वृक्ष, तिमि, अर्व - ये सप्त ऋषि.

स्वारोचिष की पुत्री दे दिमुतवादि.

३ उत्तम .. - सुशान्ति तथा सिन्धुद्वीप (इन्द्र) सुधामान, सत्या, श्रिवा
प्रतर्दन - इन पांचों के आधीन ४२ गण। तथा
ज: गात्र, ऊर्ध्वबाहु, सवन, अनघ, सुतपा.
शुक्र - ये सप्त ऋषि

४ तामस - देव, सुरू, हरि: सत्या: सुधियः - इन के २७
गण एवं शिवि ऋषि सप्तर्षियों का आगम
शंकर की गर्जिव हुआ। इन के वंश ज्योतिर्धाम,
पृथु, काव्य, चैत्र, अग्नि, वरुण, मीनाक्षी
ये सप्त ऋषि

५ रैवत (विमुद्र) - वैकुण्ठ सुरोत्तम आदि २८ गण.
एवं हिरण्यरोमा, वेदश्री, ऊर्ध्वबाहु, वेदबाहु
सुधाबाहु, पर्जन्य, महामुनि - ये सप्तर्षि
— ये स्वारोचिष, उत्तम, तामस रैवत - प्रियव्रत के

६ चाक्षुष (द्विज) - आठ गणों के ४ अधिक। तथा सुमेधा,
विरजा, हविष्मान, उत्तम, मधु: अभिमान, सहिष्णु-सप्तर्षि

७ विवस्वत - आदित्य, वसु, रुद्र, साध्य, इन्द्र, पर्जन्य.
तथा - कश्यप अत्रि, वसिष्ठ, गौतम, विश्वा
- मित्र, भारद्वाज: सप्तर्षि.

ओम्.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज मय नाप व तौल
Design of paper together with size and weight. _____

कीमत Cost _____

बेशगी Advance _____

प्रूफ चाहिये या नहीं
Proof wanted or not? _____

ता० प्रूफ भेजने की
Date on which the Proof required. _____

कब तक चाहिये
Date when required. _____

किस तरह फार्म भेजे जावें
How the work may be despatched _____

हस्ताक्षर फार्म छपाने वाले के
Signature of customer _____

ता० Date _____

- वर्तमान मन्वन्तर में - पहले द्वापर में स्वायंभुव.

दूसरे द्वापर में ~~प्रजापति~~ ब्रह्मा.
तीसरे में उशना. चौथे में बृहस्पति.
पांचवें में सविता. छठे में मृत्यु. (यमराज)
सातवें में इन्द्र. आठवें में वसिष्ठ
नवें में सारस्वत दसवें में त्रिधाम (त्रिधामु)
११वें में ऋतधाम. १२वें " सुतेजा
१३ वें में धर्म. १४ " सुचक्षु.
१५. त्रिधामक. १६ " धनंजय
१७ ऋतंजय १८ ऋतंजय
१९ आदित्य. २० गौतम
२१. वाजश्रवा. २२ वेनमौनि.
२३. शक्ति २४ पाराशरी.
२५. जातुकर्ण. २६ कृष्णद्वैपायन

कूर्म पुराण पूर्वभाग १५ अध्याय में प्रजापति कहा है कि "हे प्रजापत्य मुनिगण तुम इस देश में चले आए और वहां इन्हों ने क्या किया।"

द्विजर्षि मुख्यवीर्याः सप्तजापतिजाः सुताः।
इमं देशमनुप्राप्ता किं वा कार्यं ब्रवीतु वः।

इस के उत्तर में कहा गया है कि - वहां त्रिधाम नाम का एक बड़ा बली और अभिमानी दैत्य था. वह सब दैत्यों और देवों को शासन करता था। वह किसी से डरता नहीं था। इस की शिवजी पर भक्ति थी। त्रिधाम ने एक अत्यन्त दुष्कर व्रत और देह धर्दन से तपस्या किया था। उसे उन्हों ने उस दैत्य को मनाने भेजा।

वह गया और त्रिधाम (त्रिधामु) (त्रिधु के नेता Achilles थे) प्रह्लादादि अपने पुत्रों और अन्य दैत्यों सहित युद्ध को आया और पहले युद्ध में उस ने उन सब को हराया। इस पर त्रिधाम ने एक कूटमय व्रत किया जिस का आधार शिवजी का आराधन और मन्त्रजप था।

था। वो पुछ हुआ। हिरण्याक्ष के सामने वह पुछ चढ़ीत्व
बड़ा हुआ, क्योंकि वह शिवभक्तों को अपार था। परन्तु
उसीसमय प्रह्लाद ने उसे समाचार ऐसा दिया। तब
उस ने हिरण्यकश्यप व आँ दैत्यों को बुला। उस पुछव
के चले जाने पे हिरण्याक्ष ने प्रह्लाद का अभिषेक
कराया और स्वयं उस को तप करने लगा।

~~तप के पश्चात वो युद्ध को फिर~~
फिर वो उस ने अन्य का बदला लिया। उसने सब
सुरों और मुनियों को भगा दिया। इन्द्र को बांध लिया
और उसे पाताल में ले गया। तब ब्रह्मा का रूप धा के
विष्णु ने उसे मारा।

फिर ब्रह्म रूप धा विष्णु प्रह्लाद के यहां गए। प्रह्लाद ने
अपने पिता की मृत्यु का शोक उस पे त्याग दिया। फिर
गोमेदयज्ञ किया हुआ और अन्त में प्रह्लाद ने विष्णु को पूजा
चढ़ा दिया। अन्त में विष्णु की आज्ञा से प्रह्लाद ने
असुरों को राज्याभिषेक दिया और स्वयं तपार्थ केन चक्र
गया। इस बीच बड़ा भारी अकाल पड़ा १२ वर्ष तक। तब ब्राह्मण
मुनि सब देवों व सप्तर्षि के आश्रम में गए। उन्हें ऋषियों ने वर्षा गणेश्वर
की दी। फिर असुरों को भी हिरण्याक्ष का रूप धा मोहित किया और
जब वह आकर्षित हुआ तब उसने युद्ध किया। फिर
जीत नहीं सके। अन्त में जब वह धा छोड़ गया
तब वो चैन से बैठा। उस का पुत्र कपिल था।
कपिल ने बैठते प्रताप से इन्द्र का आसन डोल
उठा। उसे अपने पिता के वध का स्मरण हो आया और
उसने तथा सुरों ने विष्णु की भगवती स्तुति की।
विष्णु ने वामन रूप धा तीन पग पृथ्वी मांगी
और इस प्रकार बलि से कपिल पाताल भेज दिया।
बलि के वंश बाणासुर हुआ जो
शिव का पुजारी था। उस ने शिव से वर
लिया और सब देश जीत लिये। इस पे विष्णु
ने उसे का मान जला दिया।

OM.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज मय नाप व तौल
Design of paper together with size and weight. _____

कीमत Cost _____

बेबाकी Advance _____

प्रूफ चाहिये या नहीं
Proof wanted or not? _____

ता० प्रूफ भेजने की
Date on which the Proof required. _____

कब तक चाहिये
Date when required. _____

किस तरह फ़ार्म भेजे जावें
How the work may be despatched _____

हस्ताक्षर फार्म छपाने वाले के
Signature of customer _____

ता० Date _____

बाण महादेव को शरण गया। शिव ने दनु के पुत्र
अपने गणों को सन्नद्ध किया। ताम्र (ताम्रक), शंख,
कपिल, शंकु, चर्चानु, वृषपर्वा, सर्प, सुहस्त, अरिष्ट,
गन्धर्व, शुक, श्वेत, भास, सुग्रीव, अयस्तनक, महाकाल,
कालकेय, यक्ष, क्रोध, पेशु, अश्मशिरा (दनु के 20
पुत्रिकों के)

दनु पुत्रिकों में - विप्रचित्ति के दनु, शतपर्वा, लोमशा,
महत्वती के महत्, वसु के वसु, भानु के भानु, मुहूर्ता
(सुमन्यु) के मुहूर्तज। सम्बन्ध से शोक, नागवीथी के मासिमान,
पृथ्वी के अहल्यातीर्थ, - अश्विन, कुविवण।
१२ आदित्य - अंशु, धाता, भग, त्वष्टा, मित्र,
वरुण, अर्यमा, विवस्वान, सविता, पूषा, त्रिशुमान के
विष्णु, वनु पुत्र - तर्पक, वाड़वेय,
दिति के ४० - द्विरण्यकशिपु, द्विरण्याक्ष
दक्ष के १३ पुत्रियों कश्यप को, २७ सोम को, और ४
अरिष्टनेमि को ब्याही। २० धर्म-धर्म को - इनके देवगण के
वसु - आप, ध्रुव, सोम, धर, अनिल, अनल, प्रत्यूष,
प्रभास।

सृष्टि में - मरीचि, भृगु प्राणों से दक्ष, चक्षु से मरीचि,
शिर से अंगिरस, हृदय से भृगु, नेत्र से अत्रि, उदान से
पुलस्त्य, कान से पुलह, अपान से क्रतु, समान से
वसिष्ठ। देव, असुर, पितृ, मानव - आदि प्रजा की प्रजा।
प्रलय में सभी सृष्टि का अन्त हो जाता था।
फिर नैमुती सृष्टि आरम्भ हो। पृथ्वी अण्डे के रूप में
हो गई। सात महाद्वीप थे। इन में ऊंचे नीचे
के क्रम से १४ विभाग थे।
रुद्र - पहले ७ - अज, शर्व, ईशान, पशुपति, भीम, उग्र, महादेव
इन को ७ जोड़ दिये। इन के ८ देवता - रुद्र, सूर्य, जल,
मही, अग्नि, वायु, आकाश, चन्द्र। ८ दिशा - पूर्व दक्षिण

(1) आस्ट्रेलो जॉइड - मछली, गुल्म, कृमि — ६३ अरब ७५ करोड़
वृक्ष. १२,०००००००० वर्ष.

(2) प्रोटो जॉइड. पशु, सर्पादि — coal ४० करोड़ ५५ द्विमपुग

(3) पैलियो जोइड • पक्षी, फूलने वाले वृक्ष. कोई २ पशु.

(४) मेसोजाइड — वर्तमान जंतु मनुष्य. ५ करोड़ .. तृतीय

(५) सेनो जॉइड —

(3A) ईओसिनियन — नये जंतु व नये पौधे } ५० करोड़
(3B) ओलीगोसिनियन
(3C) मिओसीनियन
(3D) प्लियोसिनियन
(3E) प्लीस्टोसीनियम
(3F) पोस्टपिलियन

(4A) त्रियासिक — उड़ने वाले जंतु
(4B) जुरासिक सिगार, मछलियां
(4C) क्रिटेशस

(5A) इयोसीन २३००० वर्ष ५ करोड़
(5B) ओलिगोसीन १२००० .. ३ करोड़
(5C) मायोसीन ६००० .. १७५ लाख
(5D) प्लायोसीन १३००० १ करोड़
(5E) प्लायस्टोसीन (पिछला - ३५००० वर्ष) ५ लाख द्विमपुग.
(5F) न्यूमैन - ऐतिहासिक.

प्रथम हिमयुगान्तर ५३०००० लाख B.C. ग्रा०:
द्वितीय प्रारंभ ५००००० .. अन्त ४११ लाख
३०००
द्वि० तृतीय अन्तर १३०००० अन्त ५ वर्ष में
चतुर्थ ८०००० अन्त २५००० .. ..

30000 B.C. में दूर्मानव -

ओम्.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किरम कागज मय नाप व तौल
Design of paper together with size and weight. _____

कीमत Cost _____

बेशगी Advance _____

प्रूफ़ चाहिये या नहीं
Proof wanted or not? _____

ता० प्रूफ़ भेजने की
Date on which the Proof required. _____

कब तक चाहिये
Date when required. _____

किस तरह फ़ार्म भेजे जावें
How the work may be despatched _____

हस्ताक्षर फ़ार्म छपाने वाले के
Signature of customer _____

ता० Date _____

इयोसीन | ओलिगोसीन | मायोसीन | प्लायोसीन
प्रारंभ. 4 Loed | 3 Loed | 2 Loed | 1 Loed

(The Age of Mammals By Henry Fairfield Osborn

ओ- पहले (मायोसीन युग में) उत्तर अमेरिका में दुमेते के मायोप्लायोसीन युगों के कई प्रकार व अफ्रीका की भूमि में आ गए। दक्षिणी अमेरिका में भी, पीछे उत्तर अमेरिका में यह सब से अधिक हो गए (प्लायोसीन युग में)। अब यह सिर्फ द. अमेरिका, साथ एशिया, उत्तर अफ्रिका में हैं गए हैं। राजपुताना में भी अब समूह ही मिले। जिराफ केवल अफ्रिका में।

श्री. एच. जी वेल्स कहते हैं कि - यदि प्रत्येक देश के लिये विभिन्न प्राणी अंधे पंथे ईश्वर ने बनाए - तो यह कहना पड़ता कि यह सिद्धान्त अवैज्ञानिक है एवं बुद्धि-शून्य भी। क्योंकि प्रायः एक देश के प्राणी का दूसरे देश में आना जाना बदे या नष्ट होगए। अर्थात यह वितरण और सृष्टि दुर्भाग्यपूर्ण थी। किन्तु यदि हम प्रकृति - विकास के सिद्धान्तों की दृष्टि से देखें तो इन सब बातों का तर्कयुक्त समाधान हो जाता है। (वि. तत्व और रहस्य भा. १ पृ. २५८.

तथा - केवल द. अमेरिका के कुछ प्राणी अफ्रीका में भी पाए जाते, दक्षिणी अमेरिका के कुछ प्राणी अफ्रीका में पाए गए, अन्यत्र नष्ट हो गए।

आर्मेडिलो, इसी के समान जंतु (जो उड़ने वाले) पिंड, सिंहु अमेरिका, पहले द. अमे. में होते थे, अब आस्ट्रेलिया में हैं। हाथी (शूकर) पिंड द. अमेरिका अफ्रिका व द. अमे. सुअरों के कुल हुए प्रायः सब नाश में चूहे नहीं।

ओ३म्

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज़ मय नाप व तौल
Design of paper together
with size and weight _____

कीमत Cost _____

बेसगी Advance _____

प्रूफ़ चाहिये या नहीं
Proof wanted
or not? _____

ता० प्रूफ़ भेजने की
Date on which the
Proof required. _____

कब तक चाहियेहै
Date when
required. _____

किस तरह फ़ार्म भेजे जावें
How the work may be
despatched _____

हस्ताक्षर फ़ार्म छपाने वाले के
Signature of customer _____

ता० Date _____

- सेनोजोइक (4) युग के दो उपखण्ड हैं, तृतीय x 3.
- टर्शियरी (4 C 3) कहते हैं सेनोजोइक (4) युग का प्रथम
  पीरियड, Coal-Ranges, पैलियोजोइक युग के,
  अवशेषों का विस्तार है.
- पैलियोजोइक (3) युग, 40 करोड़ वर्ष अवलोकित, विस्तृत
  (आर्डोवी. पेलियोजोइक) 3x पर्वित है.
- सिलूरियन (3C) युग के अन्त में कैलेडोनियन
  क्रोगनी एकजुट होने से एकत्र नवीन
  के कुछ पहाड़ों
  - डेवोनियन (3A) 3 करोड़ वर्ष का, मध्य में
    पर्वत जो अब अपरदन के कारण घिस चुका है।
    80 करोड़
  - हैरीसियन से पहले (4 & 2) में हुई थी।
    4 करोड़ वर्ष के अन्त से, जिसमें 2 से 3 करोड़ वर्ष तक
    upheaval होते रहते थे। प्रायः 2-3 करोड़ वर्ष
    में हुई वे क्रिया नीचे होते, क्रोस में शामिल.
    इन आन्दोलनों में अनेक पुराने समुद्र तट ऊपर आ जाते हैं, अनेक
    नए पैदा होते हैं, अनेक द्वीप समुद्र में डूब जाते हैं।
  - इनके अलावा समुद्र तट के आसपास में प्रायः परिवर्तन
    होते रहते हैं। 4 करोड़
    II में स्थापित प्राणी रहे। इस के बाद अमेरिका
    कनाडा में हिम युग आया। लगभग 2 करोड़ वर्ष
    कार्बनीफेरस. आस्ट्रेलिया, अफ्रीका, दक्षिणी अमेरिका
    हैरीसियन में उदय। सिकुड़ने आदि में बड़े जबर्दस्त
    3 करोड़ 40 करोड़ में प्रायः भूमि महाद्वीप थी।
    डिवोनियन युग में वनस्पति का प्रादुर्भाव हुआ। (3A)
    3E में एकत्रित हुए गए। दो करोड़ वर्षों तक जंगलों के
    के जंगल की पृथिवी (समुद्र तट की) टूटकर। डिप्लिकस
    आदि, छिपकली। इन दोनों के कोयले की खानें बनीं।
    इस युग में अनेक प्रकार थी। [illegible]

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज मय नाप व तौल
Design of paper together
with size and weight _____

कीमत Cost _____

पेशगी Advance _____

प्रूफ चाहिये या नहीं
Proof wanted
or not? _____

ता० प्रूफ भेजने की
Date on which the
Proof required. _____

कब तक चाहिये
Date when
required. _____

किस तरह फार्म भेजे जावें
How the work may be
despatched _____

हस्ताक्षर काम छपाने वाले के
Signature of customer _____

_____

ता० Date _____

४ करोड़ वर्ष पूर्व - एप-मानव (पुच्छहीन कपिसदृश)
आर्कोप्लिथिसिडस, ड्रायोपिथिसिडस, ऑस्ट्रेलोपिथिसिडस
अपरिष्कृत वनमानुष. वनमानुष. वनमानुष प्रदेशीय. दे. अफ्रि. वनमानुष
- इनकी टांगें कुछ छोटी, हाथ बड़े, मस्तिष्क कुछ बड़ा, हड्डी बहुत छोटी,
वजन प्राय: ७०० पौंड। (गुरिल्ला प्राय: ४०० पौंड हैं तक है)।
१ करोड़ वर्ष पूर्व से हिम युग तक बड़ी ठंड पड़ती थी। जंगल सूख
गए थे। वनचर पृथ्वी पर रहने को विवश थे। सदा एशिया इस
दोष का - उत्तरी पश्चिम में पड़ा कर रहे थे। इसी लिये खिसकना
पड़ा।

ई. २६५
प्रथम मानव कंकाल - पिथैकैनथ्रोपस - जावा में प्राप्त। इस का
मस्तिष्क गुरिल्ला से बड़ा - आज कल के आस्ट्रेलिया के आदिम
निवासियों के समान। आगे आंद्र। सीधा चलता था।
(2) पिल्टडाउन - सुसैक्स में प्राप्त - आंखें और दांत बड़े, मस्तिष्क बड़ा
(3) सिनेंथ्रोपस - चीन में - चिम्पांजी से मिलता। सिर हड्डी को चलता
पिल्टडाउन से मिलता हुआ।
(4) हाईडेलबर्ग - जर्मनी में प्राप्त। हड्डी बड़ी। जबड़ा बहुत आगे,
शेष बातों में वर्तमान मनुष्य का।
(5) रोडेसिएन्सिस - रोडेशिया से प्राप्त। मस्तिष्क और भौंह तक
से बड़ी।
(6) नियाण्डर्थल - ये काफी मिलते हैं। क्योंकि ये मुर्दे दो गाड़ते थे।
मुर्दे के साथ उस की जीवन सामग्री भी गाड़ते थे। इन की
हड्डी बहुत छोटी होती थी। गर्दन छोटी, भौंह आगे,
दांत बड़े २ व तीखे। कुछ झुकी हुई व छोटी टांगें,
का अंदाज
इन के शस्त्र इतने आगे हैं कि आज के मनुष्य से उन्नत नहीं
कहते।
(7) क्रो-मैग्नन - बिल्कुल सीधी टांगें। मस्तिष्क बड़ा। हाथ अधिक
प्रथम हिमयुग में गड़ी बाद के ओरिग्नेशियन के पूर्व तक
उत्तर चिन. पूर्व। ईरानेड, ऊपर के हड्डियों का। मेगलिथ तक
फैला था। अमेरिका में इस का दूसरा भी बड़ा। अफ्रीका
(8) ग्रीन लैंड, स्पाड़ाने न्यूफाई लैंड तक बिल्कुल अलग थलग
था। बेरिंग की खोदाई प्रतीत होती थी। किंतु अलास्का,
न्यूफाउंडलैंड साफ बचे हैं। इसी के पानी की अधिकता,
इंग्लैंड, स्कैंडिनेविया, आइसलैंड की अलग है।
दूसरे (9) में यद्यपि ध्रुव को बर्फ आज तक फैली, परंतु
छोटे २ ओ पैलीज लोग बच गए। क्योंकि समशीतल
पहले हिमयुग में ग्रीनलैंड से, नार्वे, ग्रीनलैंड को

आइस लैंड है बीच उनकी अतल में कोई बड़ी चट्टान या भूमि निकल आई थी जिस से आर्कटिक की ठंडी पानी उधर नहीं बहने दिया। इसी से यहां मछली का बहुत बच गए।

मानव पृथ्वी का उद्भव

लगभग: पृथ्वी का ऊंचा हिम काल तो जन्म देता है अभी हिम काल उसे ठोस भी दे देता है। दोनों से भी नस्लें परिवर्तन होते हैं। पर्वत हिमकालों में छोटे हो जाते हैं।

दोनों हिम कालों में सिकुड़ने की बड़ी लंबी गई थी। आज भी अतल में ४०० फैथम भूमि उठ आवे तो कोलंबिया अमेरिका का पल सागर हो जाय।

५ लाख वर्ष पूर्व (प्लायोसीन के अंत काल में) सहारा व उत्तर अफ्रीका समुद्री तल व थे। उस के कई सहस्र मील चौड़ा व विस्तार वन और मानव जातियां लीबिया से मोरक्को और फिर इसी बीच स्पेन से मेसोपोटामिया व इंडोनेशिया तक फैल गए।

इसी बीच में किसी समय सिकुड़ने का पुराने पुराने से भूमध्य अफ्रीका - लाग बन गया। बीच २ में भूमध्यसागर परिवर्तन होते हैं अंतिम बार बढ़ती घटती गई।

५-६ हजार B.C. में ही भूमध्यसागर उपदेश बाद व पानी ले उड़ गए थे। शायद ही ये उपयोग। तीसरा में इन्हें से थी-ले इसी काल में बसने योग्य बनी, इसी बीच सिकुड़ने से ही खुले। पृ. ५४२-४३

आँज़ा

मानव या अर्धमानव के कंकाल ओज़ा १ ओड़ेसेन्टल को ५ लाख वर्ष पूर्व तक के मिले हैं। ये बहुत बड़े हैं। शायद सिल्ट डाउन है।

इस से कुछ कटि च, किंतु बड़े २ ओं आदि २ पत्थर, लकड़ी (भाला) व हड्डी के औजार व कुल्हाड़ी व कुत्ती जैसे प्रांत में स्पेन की तह के आग में मिले हैं - इसी संख्या में। ये औजार ले ५ लाख वर्ष पूर्व तक के हैं। इन के बनाने वाले बड़े हिमयुग के बाद के प्रथम काल में योरोप में रहते थे और खूब फैले थे एवं जंगलों और नदी तटों पर घूमते थे। इन्हें २ कुछ दिन जमा की भी रहते थे, जहां उन के टूटे फूटे आखेट पशुओं के कंकाल, धूमिलपाषाण आदि मिले हैं।

ओ३म्.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज मय नाप व तौल
Design of paper together with size and weight. _____

क़ीमत Cost _____

बेशगी Advance _____

मूफ़ चाहिये या नहीं
Proof wanted or not? _____

ता० मूफ़ भेजने की
Date on which the Proof required. _____

कब तक चाहिये
Date when required. _____

किस तरह फ़ार्म भेजे जावें
How the work may be despatched _____

हस्ताक्षर फ़ार्म छपाने वाले के
Signature of customer _____

_____

ता० Date _____

इसी युग में दूसरे वर्ग मानव प्रदेश दो रूप में थे। दोनों के औज़ारों में बहुत अंतर है। यह पता नहीं कि इन में परस्पर संबंध हुआ या नहीं। पत्थर और उससे पूर्व की अवस्था थी।

इन में 'पैलियोलिथन' 'मध्यपुलिथन' के रूप में विकास होते प्रमाणित हुए हैं, परन्तु इसके बाद उन में औज़ारों की शक्ति में कोई विकास नहीं आता। फिर अंतिम हिमयुग में बेलिनलावन सामने आता है। यह न्यायदर्शिका था।

— यह तीनों से ज्यादा तीखे बनाना वे उन पर लकड़ी-पत्थर चढ़ना भी जानता था। इन का उद्भव एशिया में हुआ, परन्तु ये पूर्वी योरोप में भी फैल गए थे। ये गुफाओं में रहते थे, इससे स्पष्ट है कि उस युग में भी वायुमंडल काफी ठंडा था। यह उस के युग के अन्य प्राणियों के कंकालों से भी प्रमाणित होता है। शायद फिर हिमयुग ने उन्हें एशिया से भगाया था। इन के मैमथ, पैलेसाइन, गैंडिली, अफ्रिका, अल्जीरिया, ट्रोडेशिया, दक्षिण अफ्रिका आदि में पाँते होने के प्रमाण-कंकाल मिले हैं, बल्कियों में चित्र व शिलालेख मिले हैं। यह भैंसा, बैल, घोड़ा, सांभा व रेनडियर को शिकार करता और खाता था। आग भी पकाता था। यह सारे हिमकाल में योरोप में रहा।

— इस के बाद के २० हज़ार वर्ष पूर्व के मानव में भिन्नता। अन्य अंग समान थे मिलते लेकिन खोपड़ी, ठोड़ी, माथा उभरा हुआ। इन्हों ने वर्तमान मनुष्य तक उन्नति की। इन के विकास के तीन भाग - (१) ऑरिगनेशियन - इस में आरीगनी में कुशलता, गढ़ने पर खुदाई व मूर्ति आदि बनाने में उन्नति। (२) सॉल्यूट्रियन - इस में कलों के फलक आदि बहुत सुन्दर और सुडौल बनने लगे। अन्य बातों में भी विशेष उन्नति। (३) मगदलैनियन - इस में लाख का उपयोग कम हड्डी का अधिक। बढ़िया चित्रकारी, मूर्ति निर्माण भी। दक्षिणी फ्रांस और उत्तरी स्पेन में वे पैलेसोइन्थ्रोपस इन के द्वारा बनी गुफाएँ आदि मिली हैं। ऑरिगनेशियन के अफ्रिका होने का भी पता चलने के प्रमाण मिले हैं। इसी का न्यायदर्शिका से सम्बन्ध हुआ है।

अंत में सॉल्यूट्रियन लोगों का औज़ार बनाने का एक कारखाना मिला है। वहां पत्थरों पर अनेक हुए चित्र मिले हैं। यहीं उन को औज़ार बनाने की धुन थी।

OM.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज मय नाप व वौल
Design of paper together with size and weight. _____

कीमत Cost _____

बेशगी Advance _____

प्रूफ चाहिये या नहीं
Proof wanted or not? _____

ता० प्रूफ भेजने की
Dat on which the Proof required. _____

कब तक चाहिये
Date when required. _____

किस तरह फ़ार्म भेजे जावें
How the work may be despatched _____

हस्ताक्षर फार्म छपाने वाले के
Signature of customer _____

ता० Date _____

इन्हीं पशु के कंकाल। शायद यहां उन का मेला व अस्थिक्षेप भी होता था। मूर्तियां भैंसे की, सूअर, सांड की व कुछ में सांड का धड़ व सिंह का सिर। एक बैल के चित्र में अगल बगल तीर चले दिखाए हैं। एक पत्थर में एक मनुष्य को सींगों का खांगवस्त्र पहने दिखाया है। एक दूसरी दांत के एक लड़की का चित्र खुदा है। कुछ दूसरे टाट लपेटे की मूर्तियां थीं।

(The Science of Life By Huxley & Wells)

एक उल्का के गिरने से १८ फुट तक के गर्त।
हिमयुग के अंत में गहड़ - वर्तमान शुतुर्मुर्ग से बड़े कई बड़े २ जानवरों को उड़ा ले जाते। उड़ने वाले सांप, गिद्ध मक्खियां। (The Miracle of Life

मांगोलिया में जंगली घोड़े होते थे,
चाल १२० मील प्रति घंटा, और ५०-५५ मील तक।
(जैकिली. पैलेस्टाइन का उल्लेख)

(विन्ध्याचल बहुत ऊंची था। आगे नदी हिमखंड से घिसती हुई सकती है।) आबू का उत्पात
कश्मीर काल में। (लवण के हुई (निशुंभ का उल्लेख। अन्धकासुर देवता को दुर्गा)

— हिम युग/नई पृथ्वियों के उद्भव और पुरानियों के उत्थान के कीलाग्नि से होते हैं।

(५४ख-३४८)

— ज्योतिष के अनुसार शकाब्द से ६२७१ वर्ष पूर्व मघा नक्षत्र में वसंतसम्पात की स्थिति ७३२·३४८ अंश पर थी। तब उत्तर के ६० अंश घटाने से ४२·३४८ अंश पर सूर्य का उच्चस्थान होने से उत्तरी गोलार्द्ध में सुखद समय था। ऐसे योग पिछले २७००० वर्षों में और भी कई आए हैं। ऐसे समय पृथ्वी के अनेक भागों में हिमपात व प्रलय होते हैं। (वेदकाल निर्णय-भूमिका. पृ. ४५.

ओम्.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज मय नाप व तौल
Design of paper together with size and weight. _____

कीमत Cost _____

बेबाकी Advance _____

प्रूफ चाहिये या नहीं
Proof wanted or not? _____

ता० प्रूफ भेजने की
Date on which the Proof required. _____

कब तक चाहिये
Date when required. _____

किस तरह फार्म भेजे जावें
How the work may be despatched _____

हस्ताक्षर फार्म छपाने वाले के
Signature of customer _____

_____

ता० Date _____

ओ३म्.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज़ मय नाप व तौल
Design of paper together with size and weight. _____

क़ीमत Cost _____

पेशगी Advance _____

प्रूफ़ चाहिये या नहीं
Proof wanted or not? _____

ता० प्रूफ़ भेजने की
Date on which the Proof required. _____

कब तक चाहिये
Date when required. _____

किस तरह फ़ार्म भेजे जावें
How the work may be despatched _____

हस्ताक्षर फ़ार्म छपाने वाले के
Signature of customer _____

_____

ता० Date _____

सिन्ध, कंगाल और पू. की ओर दिल्ली पू. उ. पंजाब राजपूताना अब
की ५०० फीट ऊँचे हैं। इन के समुद्र १०० फैदम है इससे तल
सिन्ध, कंगाल और पू. की. के समुद्र प्राय: ~~१८०० फैदम~~ २४०० फुट
हुवेंगे।

१२०० फुट.. राजपुताना आदि के अंतर्गत
५०० " सिंध कंगाल के.
५०० " फुट समुद्र की गहराई

२४०० "

हवोस २५२०० फुट हिमालय
कंगारोम २२६५० " "

सिद्धान्तशिरोमणि (भास्कराचार्य रचित) के मृगोल -

भूमि के आधे (गोल के) आगे क्षारसमुद्र (कास्पियन या भूमध्य)
जम्बूद्वीप। दूसरे आधे पश्चिम के आगे ६ द्वीप
इन के समुद्र- क्षार, क्षीर, नवण, दुग्ध, दधि, घृतोद, इक्षु.
बड़वानल - पाताल लोक का, जिस में सर्व मछलियों को प्रकाश
होता है और असुर तथा नाग लोग रहते हैं। यहां शाक, शाल्मलि
कुश, क्रौंच, गोमेद, पुष्कर के ६ द्वीप हैं।

~~लंका के उत्तर में हिमगिरि, हेम कूट और निषध के सिंधु~~
क्षारब्धि की संधि पर ध्रुव (निरक्ष) देश। जम्बूद्वीप में
ध्रुव से पृथ्वी की परिधि के चतुर्थांश पर चारों ओर ४
पुरी हैं - लंका, रोमक, सिद्धपुरी, यमकोटि। इन पुरी से
जिस दिशा में मेरु - सो उत्तर। अतः लंका से उत्तर हिमवान,
पूर्व पश्चिम समुद्र पर्यन्त। उस के उत्तर में हेम कूट - मेरु की
समुद्र पर्यन्त। उस के उत्तर में निषध। इन के बीच में
द्रोण देश वर्ष। उस में पहला भरत, उस के उत्तर में
किंपुरुष व हरिवर्ष। सिद्धपुरी से उत्तर में श्वेतवान, रोमक
और नीलगिरि। ये भी समुद्र पर्यन्त लम्बे। उत्तर में समुद्र
~~के बीच में अन्तरीप~~ उत्तर में हिरण्य व ऐरावत।
यम कोटि से उत्तर में माल्यवान - वह निषध नील तक
दीर्घ उस के समुद्र के बीच में केतुमाल तथा

ओम्.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज़ नम्बर नाप व तौल
Design of paper together with size and weight. _____

कीमत Cost _____

बेशगी Advance _____

प्रूफ़ चाहिये या नहीं
Proof wanted or not? _____

ता० प्रूफ़ भेजने की
Date on which the Proof required. _____

कब तक चाहिये
Date when required. _____

किस तरह फ़ार्म भेजे जावें
How the work may be despatched _____

हस्ताक्षर फ़ार्म छपाने वाले के
Signature of customer _____

_____

ता० Date _____

निषध, नील, मात्यवान, गन्धमादन के बीच में इलावृत
नाम का नवाँ खंड। सा स्वर्ग भूमि।

इस इलावृत के आदि में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को
था। दिवा के दिन। इसी दिन से इस का नाम 'आदित्यवा'
पड़ा - आदि दिन। विष्णुधर्मोत्तर पुराण
बड़ा नगर्भा मुदपात्र अंते सत्पेंद वो उथमं कमूद।
प्रथोसिता देर्दिन मासवर्ष युगादिकालं युगपत् प्रकृतिः।

बड़ा। कुमुद के यम कोटि (स्था! पूर्व पश्चिमे) मिश्रकपतनं च
अथस्तात: सिद्धपुरं सुमेरु: सौम्येऽथ पार्श्वे बड़वानलस्थ्र।
२७ फरवरी
युवनकोश. सिद्धार्थ शि.

इस इलावृत के मध्य में कनक (ने स्य मेरु गिरि दान के आकार
का। इस मेरु पर ३ शिखर। इस के नीचे विष्कम्भ शैल। यम
कोटि की ओर सुपार्श्वस्थित वन। मंदर पर्वत पर
अरुणोद सरोवर। सुगन्ध शैल के मस्तक पर केतुवृक्ष और
जम्बू - इसी से जम्बू द्वीप। नन्दन वन में प्रान्तसरोवर। और
पर्वतों पर बड़े २ वन, वट वृक्ष के सरोवर श्वेत जल के।
इन में से विष्णुपदी को मन्दाकिनी - विष्णुपद के मेरु पर
चार धाराओं में बहती है। भद्राश्व के इस का नाम सीता
आते में अलकनन्दा, केतुमाल में चक्षु, कुरु में भद्रा जाती है।

आते में चौबीस वे सब कुल पर्वत -
ऐन्द्र-कशेरु, ताम्रपर्णी, गभस्तिमान, नाग, सौम्य, वरुण
गान्धर्व, कुमारिका इन में से सिर्द कुमारिखण्ड में वर्ष व्यवस्था।
अनुसार में अन्तर लोग कहते हैं।
कुल पर्वत - महेन्द्र, शुक्तिमान, मलय, पारियात्र, सह्य, विन्ध्य,
अक्षद।
- लंका में यदि सूर्योदय हो तो उज्जयिनी में मध्यरात्रि में हुआ।
सिद्धपुर में उस समय अस्तकाल और रोमक पत्तन में सायं।

ओम्.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

डिज़ाइन कागज़ मय नाप व तौल
Design of paper together with size and weight. } _____

क़ीमत Cost _____

बेआगी Advance _____

प्रूफ़ चाहिये या नहीं
Proof wanted or not? } _____

ता० प्रूफ़ भेजने की
Date on which the Proof required. } _____

कब तक चाहिये
Date when required. } _____

किस तरह फ़ार्म भेजे जावें
How the work may be despatched } _____

हस्ताक्षर फ़ार्म छपाने वाले के
Signature of customer } _____

_____

ता० Date _____

द्रव के अणुकी गतियां — सात

श्रीधर.

स्याद्दावहः प्रवहः उवहः संवहौ च स्वादिर्वहः पवनोवहश्च । स्कन्धाद्रूपेण महतस्त्रिः सप्त संख्या विशेषणा पवनस्यैव वहस्यैव हुवे ।

निर्घातोल्का धन सुषिरविद्युतः उ वाते संदृश्यन्ते मुञ्जाल्लधिप्रवहे वाड़वेऽग्निस्थितेऽस्मात् सञ्चित - लवणाम्बुतस्थिता धूमलताः । विवर्तते पवनजीताः सर्वतस्ता दृवन्ति धुमकिरिका तप्ता विद्युतस्तत्स्फुलिंगा ।

सिद्धान्तशि. — भूकक्षाभावहः ह्यहर्वत्तदूर्ध्वः स्याद्वहः प्रवहः संवहश्च । अन्यस्तोयं प्रवहः पश्चिमेनाऽवहः परिवर्तकोऽस्मात् वायुः पाताद्वहेत् पवन उदितः ।

— वर्षान्ते निर्जलो मेघो, वायुना विलयीकृतः
दग्धभूताश्रयश्चाग्नौ पतन्ति वसुधातले ।
धूमावयवसंश्लेषात्तेषु धूमः प्रजायते किंचिदुष्मा
ततस्तापादधस्तेषु पुनर्वर्षासु शेषिताः ।
भूवायुना विश्लिष्टास्तु विलयिते लवणाम्बुतले.
तद्वज्जः संहतिर्हेतु मद्भिश्चापि न शक्यते ।

संदृश्यन्तेऽनु - इत्यनुवृत्तम् -
भूस्थितैर्जोधूमैर्दिगन्तरोन्मिश्रं संस्थितैः
सूर्यस्य किरणैः मिश्रैरिन्द्रधनव भासते ।
विलोक्यवं वस्तु यदृष्टे र्विदधात्यक्षम्
तेनाभ्रमहतो भूतं दृश्यते शक्र चापवत् ।

सृष्टिविज्ञान - आत्मा एवं अमृतसरोवर ऐस. ए. दुहान की टिप्पणी

आधुनिक शरीरशास्त्रीय शरीर के ७ आवरण मानते हैं।
मानव शरीर के पांच कोश - अन्नमय (आँते), प्राणमय
(श्वासनलिकाऐं), मनोमय (Sense organs ज्ञानेन्द्रियां)
विज्ञानमय (मस्तिष्क) कर्मेन्द्रिय (Nervous System)
आनन्दमय कोश (आत्म - प्रसन्नता, सुषुप्ति, आनन्द)

=आयुष्मं मन्मह्यते, दीर्घायुत्वाय आयुषम्. मह्यदेषु
त्र्यायुषं तन्मे अस्तु त्र्यायुषम् । यजु. अ. 3. मं. ६२
इन की तिगुनी आयु होती थी. मैसी इन्हें कहते हैं।
(अधिक उन्नत थे व बहुत से मरण) ३०० वर्ष

तब आदित्यमसा गूढ़ मगे - ऋ. c०. ७. १७-३
प्राचीन काल में अधिक होता था।

- हिमालय के दुर्याधन का प्राचीन दांत, जो गंगातट पर मिला
१५ फुट ३ इंच का।

या अंशधी: पूर्व जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा ।
ऋ. १०. ९७. २.

उन्हें युगों बहुत से बात बिल्ल औंगस्थिति लोग
के दैवे मालूम हुई गई थी।
सूर्यसिद्धान्त के उल्लेख सृष्टि विज्ञान में

अल्पावशिष्टे तु कृते प्रथम मन्वन्तरादितः
कृतं नाम पुण्यं निरुपद्रवं मुक्तमम्
ऋषयः सप्त मनवश्चत्वारो ज्योतिषां गतिक्रमम्
आदित्यमन्विवस्वन्तं तमसोपे वदुश्चरम्
शृणुष्वैकमनाः पूर्वं यदुक्तं ज्ञान मुत्तमम्
युगे २ महर्षिणां स्वयमेव विवस्वता।
शास्त्रमाद्यं तदेवेदं यत्पूर्वं प्राह अव्ययः
युगानां परिवर्तेन काल भेदोऽत्र केवलम्।

आगे युगपद्धति कि
युगस्य एकसप्तति सैका मन्वन्तर मिहोच्यते
कृताब्द संख्या तस्यान्ते सन्धि पूर्वो जलप्लव:।
यह सन्धि काल १७२८००० वर्षों का होता है
जिस में पृथ्वी जलमय (हिममय) होती है।
वर्तमान सृष्टि को ६ आये ३२ कोटि वर्ष चलता है

ओम्.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज मय नाप व तौल
Design of paper together with size and weight. _____

कीमत Cost _____

बेशगी Advance _____

प्रूफ चाहिये या नहीं
Proof wanted or not? _____

ता० प्रूफ भेजने की
Date on which the Proof required. _____

कब तक चाहिये
Date when required. _____

किस तरह फ़ार्म भेजे जावें
How the work may be despatched _____

हस्ताक्षर फार्म छपाने वाले के
Signature of customer _____

_____

ता० Date _____

दूध में ७ वां मन्थन चल रहा था, अतः आधे में ७ ही बीते हैं।

आर्यभटीय के सिद्धान्त की भूमिका -

समुद्र मंथन - महाभा. आ.प. अध्या. १७ से १८ तक में - देवताओं ने समुद्र मथने का संधि की। कूर्म पृष्ठ पर मन्दर पर्वत रखे जाने की कथा। मन्दर पर्वत को औषधियों का समुद्र में मिलने से उस का अमृत दूध होगया। घृत भी निकला।

इस दूध से कहते चन्द्रमा व घृत से लक्ष्मी, सुरा, उच्चैश्रवा (घोड़ा) व कौस्तुभ मणि उत्पन्न हुए। पारिजात, सुरभि और अमृत घट लिये धन्वन्तरी। फिर चारों वेदों से विभूषित ऐरावत हुआ। अन्त में हलाहल विष।

भागवत - इन्द्र ने अगस्त्य ऋषि को मन्दर पर्वत के साथ संधि का समुद्र मन्थन किया। पहले ~~सुरभि, शिव वासुकी, सुरा~~ - ~~चन्द्र, शीतांशु~~ हलाहल, फिर सुरभि, उच्चैश्रवा ऐरावत, कौस्तुभ, अमृत धन्वन्तरी, लक्ष्मी, वारुणी, पारिजात, अप्सरा।

विष्णु पु. ई. ई में पहले सुरभि, फिर वारुणी, पारिजात, शीतांशु चन्द्रमा, हलाहल, कमण्डलु लिये धन्वन्तरी, लक्ष्मी। इस में विशेष कुछ कहा नहीं है।

ब्रह्मवैवर्त पु. प्रकृतिखंड. अ. ३८ में - पहले धन्वन्तरी फिर उच्चैश्रवा, कालकूट, ऐरावत, लक्ष्मी, सुरभि,

समुद्र का अर्थ अन्तरिक्ष भी है। (१४/१५)

नक्षत्रों के स्थान - अन्तरिक्ष में नक्षत्रों के स्थान और गति का पता लगाना कठिन हो गया तब देव दैत्य - गुरु के पुत्र विद्वान मित्र को बैठे। दोनों ने मित्र को आकाश का मन्थन किया। मन्दर पर्वत स्वरूप ऋग्वेद विष्णु और सूर्य के अंश वाली रेखा संघोषित हुई। क्रम में ऐरावत रूपी विद्युत आविर्भूत और तिरोभूत हुई। फिर सोलह विलोड़ित और मथित हुआ। क्रम से उच्चैश्रवा (लक्ष्मी) के साथ चन्द्रमा की स्थिति - स्थान परिवर्तन में निर्णीत हुई। लक्ष्मी के बाद

सुरभि कपिला (पृथ्वी-गौ) की स्थिति का पता लगा। कौस्तुभ रूप ध्रुव तारा मिल गया एवं अन्य ग्रह नक्षत्रगण राशिचक्र के स्थान में यथायुक्त सन्निविष्ट हुए। सावन वर्ष यथोचित रूप से निर्धारित होने लगे। याग यज्ञादि अनुष्ठित होने लगे। अन्वर्थतः रूप से कुम्भ लग्न राशि के 30 अंश को अतीत आपित हुआ। महर्षि पाराशर ने विष्णुपुराण के तृतीय अंश के द्वादश में लिखा है कि:-

"ततः प्रभातसमयः सूर्यः प्रथमो दिनं वर्त्मना
ज्योतिश्चिंच यथा पूर्वं प्रथमुर्मुनिसत्तम! 1.6.19

चन्द्र-सूर्य - सृष्टि के उत्पादक विष्णु पुराण के। प्रजापति ब्रह्मा के प्रजासृष्टि के लिये सूर्य-चन्द्रमा के, पति-पत्नि के रूप में।

पीछे कल्पितकाल ने चन्द्रमा को तारापति बनाया तब उस की ज्योत्सना को लक्ष्मी बना दिया। यथा-

'दाक्षायणी पतिं लक्ष्मी सहजं च सुधाकरं'। शब्द तारावली, सूर्य-विष्णु था ही।

सूर्यः सिताश्वो द्व्यक्षो वाजिवक्त्रोऽत्रि गोत्रजः
काश्यपो नाम गौर्यां मे मनिचिर्मनुरङ्गिराः।
ज्योतिश्चक्रे ग्रहाश्चैव त्वयैते पवनो भुवः
शौनकोऽसावथर्वाग्नेः ज्योतिः शास्त्र प्रवर्तकः।

पाराशर ने पौलिश को वशिष्ठ का नाम दिया है, प्राचीन ग्रन्थों में ब्रह्म सिद्धान्त और रोम सिद्धान्त नाम ग्रन्थों से उद्धरण मिलते हैं। कुल २०.

आर्यभटीय - शाके 423 में बना। उसमें और उससे पहले ग्रन्थों में अयन गति का वर्णन नहीं है।

१८ संख्या

अ ई उ ऋ ऌ ए ऐ ओ औ अं
० ०० ००० ०००० ०००० ००००० ००००००

क ख ग घ ङ क्ष
१ २ ३ ४ ५ १० १००

दो पुलक है बाद पृथ्वी बढ़ती है। कुल के दिन में। लगभग ४०४० योजन होती है। लगभग: कल्प के आदि में पृथ्वी का व्यास १०४० योजन होती

ओम्.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज मय नाप व तौल
Design of paper together
with size and weight. _____

कीमत Cost _____

बेशगी Advance _____

प्रूफ चाहिये या नहीं
Proof wanted
or not? _____

ता० प्रूफ भेजने की
Date on which the
Proof required. _____

कब तक चाहिये
Date when
required. _____

किस तरह फार्म भेजे जावें
How the work may be
despatched _____

हस्ताक्षर फार्म छपाने वाले के
Signature of customer _____

_____

ता० Date _____

आर्यभट के मतसे चारों युगक्रमोंके दूसरे हैं और संधिकाल सतयुग त्रेते एवं द्वापरके बराबर चतुर्युगी होती है।

पुरुष एक योजन (4 कोश) होता है।

अहः एक योजन अंगीरस एक योजन विस्तृत है- दिनके अधिपति सवितासे पालित हैं। पृथ्वी चलती है पूर्व दिशा। सात वसिष्ठ सप्तर्षि तारे हैं।

जब लंका में सूर्योदय, तब सिद्धपुर (उत्तर) में सूर्यास्त।

प्राचीन सूर्यसिद्धान्त (शक्तिप्रकाशकांडिम विद्युत् जि. मुज़फ्फरपुर)

दूषित ग्रन्थों में से जानकारी में अधिकतर शब्द यूनानी हैं और तालिका में आकी। दूसरे भी ग्रीक शब्द हैं,

तै.ब्रा. २.८.१८.३ जितने नक्षत्र हैं, वे सूर्य के समान काफी से तेजस्वी हैं, परन्तु उन के प्रकाश का क्षय (घटना) सूर्य से ले लिया है (उन के अति दूर होने से) अतः उन्हें हम न-क्षत्र कहते हैं।

अथर्व. १९.२-४.५२ प्रजापति ने 33 लोक (अग्नि-वीरे वर्ती तक 20 व क्षत्रिय की 13 श्रेणियाँ) रचे हैं।

अमरकोश- कांड १ क्षत्रवर्ग में सूर्य के विशेषण- गुरु पति लिखाये, गुरु नहीं। वह सब अन्य मूर्ति की घूमता है।

- इस लोक जगत के एक ही सूर्य हैं। ऋ. ८-५८.२.
- सूर्य अनश्व पैदा हुआ और बिना घोड़े के ही बड़े तेज से अपनी परिधि में चलता है। ऋ. १-१५२.४
- सूर्य एक अंग से कुछ दबा और उस में कुछ नीला धब्बा है, काली. उ. यु. इं. सं. २४.
- बुध और शुक्र का मार्ग सूर्य और पृथ्वी के बीच से है,

यह वेन: (Venus वैदिक शुक्र ही) और सति (बुध) सूर्य के पास शिशु के तरह प्रतिदिन बढ़ते हैं (कला घटती बढ़ती) परन्तु विप्र (गुरु) के लिये यह निश्चल नहीं है। ऋ. १०.१२३.१

यह वेन देवों में सब से पुराना है। मनु 33.33

सूर्य के दो तेज स्वरूप शुक्र और बुध हैं। शुक्र चन्द्रतुल्य है, कोई इसे चन्द्रमा का पुरोवर्ती और इस लिये शुक्र को उशना कहते हैं,

- जगत्पू जिसको विज्ञान "प्रकाश का जगत्पू कहते हैं,

चंद्र- सूर्य रश्मिरश्चन्द्रमा गन्धर्वः। मै. सं. 3.4.6.1 चंद्र सूर्य के प्रकाश से चमकता है, लोमो अंशुमान्। (चन्द्र में रोम प्रकाश है) अथर्व ८.१.२

ओम्.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज मय नाप व तौल
Design of paper together
with size and weight. } _____

कीमत Cost _____

पेशगी Advance _____

प्रूफ चाहिये या नहीं
Proof wanted
or not? } _____

ता० प्रूफ भेजने की
Date on which the
Proof required. } _____

कब तक चाहिये
Date when
required. } _____

किस तरह फार्म भेजे जावें
How the work may be
despatched } _____

हस्ताक्षर फार्म छपाने वाले के
Signature of customer } _____

_____

ता० Date _____

संगति - अर्धं घस्तामो अहस उत क्रतुः सुमद्गणः। ऋग्. १५.६.

गुरु- मृदुर्ध्रुवोऽध्वरसीदन्नु स्थितश्चै अंगे १२ वर्ष ३१५ दिन २०½ घं
२ मिनट ७ सेकंड में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है। इस
के नाम बृहस्पति, अंगिरस, तिष्यसभव (पुष्य से उत्पत्ति
के कारण)

बृहस्पतिः प्रथमं जायमानो महो ज्योतिषः परमे व्योमन्।
ऋ- ४-५०-४

.. .. जायमानः तिष्यं नक्षत्रमभिसंभूव
तैत्त-ब्रा. ३.१.१.

तिष्य से युक्त होने के कारण बृहस्पति दिवाकर कहे गये,
फिर पुनर्वसु काल जब कहा हो गया तो तिष्य से उत्पत्ति
मानी गई। ऐसे ही कुछ कथ तैत्तिरीय से मानी गई।

बृहस्पति के दोनों ओर दो २ गुरु ऊँचे हैं। ऋ. ४.५३.१५

शनि - ९०८७२३००० मील २९ वर्ष १५५ दिन २३ घं १५ मि.
३२ सेकंड में सूर्य की एक परिक्रमा। यह दूसरा सूर्य है। इसी
लिये सूर्यपुत्र कहा है, मन्दगति। इसीलिये शनैः चो।
इसके ८ उपग्रह मा चन्द्रमा हैं। सोइस की प्रदक्षिणा करते
हैं।

इसे ऋग्वेद में तीन परिधि व अनेक वर्णकाल ४.५३.१३
सूर्य के समान और अनेक उपग्रहों से घिरा। ४-५५-५ ने
४५५८
पुराणादि में दो तीन ग्रन्थों में वर्णन मिलता है। ऋग्वेद में है।
मील. व्यास ३४५०० मील ८४ वर्ष ५ दिन १५ घं ४१ मि. ३६ से.
का इसका एक चक्र

शनि ने गौर बृहस्पति को सु-सिता (पुष्य-पुनर्वसु नक्षत्रों का
सिता), शनि को बृहस्पति का सिता और दोनों को शनि
(उत्तम)
कांक्षिता मानते थे।

वरुण (नैपच्यून) इसका भी वर्णन ऐतरेय ग्रन्थों में नहीं है।
दूरी २८७ करोड़ मील। १६४ वर्ष २२५ दिन में एक चक्र। व्यास
३५१०३ मील इसके दो उपग्रह हैं। इस की उपमा कृष्ण
मूर्ति से १००० वें अंश से दी - ठंडा है। इसीलिये जल देवता।

आश्विन के नक्षत्र - अश्विनौ, अश्व (Great Bear) ऋ. १.२४.१०.
शशपत, शुद्धमत्स्य (नौदल) Orbsblack अथर्व ५.१.२.२२
अनुमति, आश्व. गृह्यसूत्र. २.७.२२.
जेल एंड में ५३०० नक्षत्र हैं। अथर्व. १९.३.५.२.

दक्षिण दिशा

यम लोक - यम, वैवस्वत (शुभ) निरयंतु (अप दक्षिणा)
नौ धारुज (Nairs), व्याध Canis major, श्वान
श्वान Canis minor.
दक्षिण दिशा में ८८००० नक्षत्र सुनि तुल्य (नौ लाख
ने सुनि दूरी बताते) यादृवत्स्य स्मृति प्रायश्चित्ताध्याय
, नागपुर, अगस्त्य, पारिक्षित, देवज्ञ नक्षत्र
बृहत्संहिता (आदित्यचारी)

२८ नक्षत्रों के नाम रूप - (अथर्व १९.१.७-८)
पृथ्वी गोल है और सूर्य से आकर्षण से बद्ध हुई है।
सूर्य द्युलोक और भूलोक अर्थ दे० २.३३.८ / १.१५४.१४
बताते हैं। ऋ. ४.५३.३.
लोचना. (१४-५) गोपथ ब्रा. (१.१०) सूर्य न उदय होता न
छिपता। पृथ्वी के घूमने से उदय अस्त दीखते हैं।
युगव्यवस्था के प्रमाण वेदांग अथर्व में (८.२.२१/१०.२१.८)
कल्प की कल्पना ऋक में है - १०.१९.

मनुर्वैवस्वतं - अक्षाजाय क्षितवं कृतायादिनदर्थं त्रेतायै दृत्यिं
द्वापायादिलिनमास्कन्दाय सभास्थाणुम्।
यजु ३०.अ ३०.१८.
१२ मास और अधिकमास / ऋ. १.२५.८.
पुत्र
बड़वा अश्व की रात्रि को कुछ और पौत्रि (बड़वा पुत्र) को (एक)
चतुर्दशी पुत्र पौत्रि को अनुमति, चतुर्दशीपुत्र अश्व को, सिनीवाली।
१४.१५.८.३० पर दूते थे। — ते. ब्रा. ३२.१०.
चन्द्रमा की आड़ में आ जाने से सूर्यग्रहण होने के उल्लेख
ऋ. ५.४०/५.९

भूमदेनु - अथर्व १९.५.१०.

— सबसे ऊपर राशिचक्र
(२) द्युलोक, सूर्य, नक्षत्र गृह (३) अन्तरिक्षचन्द्रमादि
(४) वायुमंडल, जल, मेघादि
वेद आर्यों आदि के अनुसार पृथ्वी से १२ योजन ऊपर वायु
मे ७ प्रकार के हैं - आवह, प्रवह, उद्वह, संवह, सुवह, परिवह,
वायह। इन के ४९ भेद हैं - एक २ के सात २

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज नाप व तौल
Design of paper together with size and weight. _____

कीमत Cost _____

पेशगी Advance _____

प्रूफ चाहिये या नहीं
Proof wanted or not? _____

ता० प्रूफ भेजने की
Date on which the Proof required. _____

कब तक चाहिये
Date when required. _____

किस तरह फार्म भेजे जावें
How the work may be despatched _____

हस्ताक्षर फार्म छपाने वाले के
Signature of customer _____

ता० Date _____

३६० अंश का १ चक्र, जिसमें ३ नाड़ी (नक्षत्र), प्रत्येक अंशमें ६० कलाएँ (८०३) प्रत्येक कला में ६० विकला, प्रत्येक विकला में ६० अनुकला / कि. १.१६४.४८/८.४६:२२/१६३.६ अर्थात - ८.४६.३८

पहले पांच वर्ष का एक युग पंचांग लगे आत है लिये कल कालाथ

शक वर्ष में ३१७८ मिलाने से गत कलि वर्ष होते हैं। को छूमकाल का शुक्ल संवत - संगत्लो से कुमारित क चंचलाई. फल्गुन वर्ष ?

ज्योतिष के सांकेतिक शब्द

अत्यग्नि १७ अज १ अनल ४ अभ्र ० अग्नि २ अङ्क ६ पक्षिणी
आत्म ० अर्क १२ अम्बुधि ४ अङ्क ९ अवधि ४ अग्नि ३ अद्रि ७
अग ७ अक्ष १२ अग्नि २ अनल ७ अग्नि २० आश ८
आदित्य - तोड़ा हुआ / आहत - पुलिस / इन्दु १ इन्दु १५ इभ ८
इन (सूर्य) १२, इषु ५ ईक्षण २ ईला १ ईश ११ उग ८
उडु २७ ऋक्ष २७ ऋतु ६ कुरु १० को २ अल ६ कु १
कुंजर ८ क्षमा १ क्षत ४ खे ० खग ६ खेट (ग्रह) ९ गज ८
गो ९ गुण ३ घन १७ घात-गुणन / चन्द्र १ छिद्र ० जलधि ४
जिन २४ ज्ञिनेषु १४ ज्वलन ३ तर्क ६ तत्व २५ तान ४९
तिथि १५ त्रि ३ तुरंग ७ दन्त बत्तीस ३२ दहन ३ दस्र २
नाग दि ० दिन ३० दृक २ द्वि ८ द्वि २ देव ३३ नाव २० नग ७
नन्द ९ नाग ८ निशाम ४ पक्ष २ बाण ५ भुजंग ८ भू १६
भूमिधृ ७ मह ४ मार्गण २ मुनि ७ यम २ रंध्र ९ लि ६
लिंग ३ लोचन २ वसु ८ विपत् ० विश्व १३ वेदिदृग ३
व्याल ८ शून्य २१ शिखी ३ शिवमुख २ शोणित-किरण
सितकच १ सिद्ध ८४ हीन - घराना /

---

१४ मन्वन्तर - स्वायम्भुव, स्वारोचिष, औत्तमि, तामस, रैवत, चाक्षुष
वैवस्वत, सावर्णि, दक्षसावर्णि, ब्रह्मसावर्णि, धर्मसावर्णि, रुद्रसुत्र
रौच्य, भौत्यक्
इन में ६ तो बीत गए, सातवें के २७-चतुर्युग बीत चुके / २८ वें कलि चल रहे हैं।

ओ३म्.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज़ मय नाप व तौल
Design of paper together with size and weight _____

कीमत Cost _____

पेशगी Advance _____

प्रूफ चाहिये या नहीं
Proof wanted or not? _____

ता० प्रूफ भेजने की
Date on which the Proof required _____

कब तक चाहिये
Date when required. _____

किस तरह फ़ार्म भेजे जावें
How the work may be despatched _____

दस्तखत फ़ार्म छपाने वाले के
Signature of customer _____

ता० Date _____

असुरों ने ~~कर्तन~~ कृतयुग के अन्त में कुछ समय पूर्व कठिन तपस्या से काल ज्ञान व ज्योतिष ज्ञान दिये। सू. सिद्धान्त अ. १

अन्य जाति के मुनियों ने ज्योतिष का अन्वेषण किया। उसे पता लगाकि दिन का आकर्षण केन्द्र सूर्य है। उस की गति, स्पष्टीकरण सिद्धान्त अन्य ग्रहों का पता लगाया। फिर श्रौतर्षि देवताओं ने कार्योपयोगी शास्त्र (ज्योतिष) दिखाया। गया।

तै.ब्रा. ३.१०.१.

युगमान

अहि संधि युग	१४४००० सौ वर्ष	दिव्य वर्ष ४००	कुल १४२८०० सौ वर्ष
कृतयुग	१४४००० "	४०००	
अन्त संधि	१४४०० "	४००	
त्रेता. आ. संधि.	१०८०० "	३००	१२९६०० "
त्रेतायुग.	१०८००० "	३०००	
अन्त सं.	१०८०० "	३००	
द्वापा. आदि सं.	७२०० "	२००	८६४०० "
द्वापायुग	७२०००	२०००	
अन्त सं.	७२०० "	२००	
कलि - आदि सं.	३६०० "	१००	८३२००० "
कलि -	३६०००० "	१०००	
अन्त सं. -	३६०० "	१००	
एक मन्वन्तर के	३०६७२०००० सौ वर्ष		८३२००००

लंका वर्तमान (सीलोन) नहीं है। वह तो निरक्ष से उत्तर और उज्जैन की सदृश रेखा में कुछ दूर है। लंका कोई द्वीप या नगर निरक्ष पर, वर्तमान सीलोन के दक्षिण पश्चिम कोण में था, जहां अब समुद्र है। सू-सि. विवेक ६२ पृ. २५.

देवगोल - देवों (उत्तर ध्रुव) मेरु और सुमेरु के बीच, नाभेरुत्तर युक्त अनेक लोकालोक पर्वत है। यह है उत्तर (उत्तर) ध्रुव और इन्द्रादि देव और महर्षि रहते हैं। दक्षिण में असुरादि रहते हैं। उस की परिधि की सीध में यह महार्णव है जो देव असुर विभाग की भौगोलिक रेखा है। मेरु से सदृश से समानान्तर पूर्वादि दिशा ओं में देवों के नगर हैं। पूर्व में (उदय) भद्राश्ववर्ष है. उस में यमकोटि। दक्षिण में भारतवर्ष, जिस की महत्ता लंका। पश्चिम में केतुमाल में रोमकपत्तन। उत्तर में कुरुवर्ष हरि पुरी।

OM.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज़ मय नाप व तौल Design of paper together with size and weight. _____

कीमत Cost _____

बेबाकी Advance _____

प्रूफ़ चाहिये या नहीं Proof wanted or not? _____

ता० प्रूफ़ भेजने की Date on which the Proof required. _____

कब तक चाहिये Date when required. _____

किस तरह फ़ार्म भेजे जावें How the work may be despatched _____

हस्ताक्षर फ़ार्म छपाने वाले के Signature of customer _____

ता० Date _____

पुस्तक नम्बर	नाम पुस्तक	पुस्त की

ये सब नक्षत्र मृगशिर के चतुर्थांश पर स्थित हैं एवं इन नक्षत्रों के साथ अन्त पाते हैं। पूर्वोक्त नक्षत्रों में जब सूर्य दीखता है, वह विषुवत वृत्त है। जब सूर्य विषुव वृत्तस्थ होता है तब वह विषुवच्छाया व अक्षोन्नति नहीं होती। निरक्षदेश (पूर्वोक्त नक्षत्रों) के उन्नादक्षमंडल क्षितिज वृत्त में दोनों ध्रुवतारा हैं। इस लिये क्षितिज वृत्त में ध्रुव दीखते नहीं है। इसी कारण वहां का लम्बकांश ९०° है और मेरु का अक्षांश ९०° है।

कालमान - ब्राह्म, दैव, पित्र्य, प्राजापत्य, बार्हस्पत्य, सौर, सावन, चान्द्र, नाक्षत्र।

बृहस्पति का ६० वर्ष का
प्रजापति - १ मन्वन्तर का
ब्राह्म - १ कल्प.
दैव -

सम्वत - अबुलरैहान ने काफी छानबीन के बाद आईने अकबरी (पृ. २६८ कलकत्ता सन १८६७) में जो गणना दी है, उस के अनुसार इस समय (सन १९४४) में युधिष्ठिर का सम्वत ५०४४-४५ है।
— श्री शङ्कराचार्य की 'राजावली' के अनुसार भी कलियुग के ३०४४ वर्ष बीतने पर विक्रम सम्वत शुरू हुआ। दोनों में १९४५ वर्ष का अन्तर है।
— सूरत के मन्दिर में दो शंकाओं में के शिलालेख में ११६८ संवत् के साथ पञ्च देशादित्य गया था. जिसमें सम्वत २६६३ युधिष्ठिर का पड़ा था। यह ईसवी सन से ४३८ वर्ष पूर्व का निकला हुआ था।
— ज्योतिष (लगधी संहिता) के अनुसार युधिष्ठिर के शासन के समय सप्तर्षि मघा नक्षत्र पर थे।

चीनी सम्वत - ९६००२३९० चीन के पहले बादशाह से / + ५४
खतई सम्वत - ८८८४०२४३ खता की आबादी से (आईने अक. पृ. २७२)
चालिड़या (कालिया) १५१९४४ ई. सन से ९११७४ वर्ष पूर्व से.
इब्रानी - हिसाबे ५०७४ वर्ष पूर्व से. + ५४
स्पार्टी " ३५९५ " " "
फारस " " ३०७० जरदुश्त " " कुल २८६७ वर्ष
चीन " " ५०४४ कुल २८६७ + २४ (सन्धिकाल)
मिस्री " अनेकसे- २५३०० सिकन्दर तक. २२९८ सिकन्दर से पूर्व
मूसार्ट " ९५७३ ई. पू. से.
इब्रानी ४००५ ई. पू.

प्रो. ड्रेपर ने ज्योतिषशास्त्र के प्रमाणों के आधार पर बताया है कि महाभारत के पहले ट्रिम युग के लोगों में ओ. सामव अस्थियां और ट्रायी के अवशेष मिले हैं, वे कम से कम २४००० वर्ष पुराने हैं।
(हिस्ट्री ऑफ दि कॉन्फ्लिक्ट बिटवीन रिलीजन एण्ड साइंस, अध्याय १८७६ ई.)

- पुष्यमित्र शुंग - महाभाष्य (पातंजलि का समय ८३ ई.पू. १७६ इस नाम को कि शोलवारात्मक मानते हैं।

विक्रम - कालिदास के ज्योतिर्विदाभरण में - वर्षे सिन्धुदर्शनाम्बुधिगुणे याते कलौ संमिते।

पं. गणनाथ तर्कवाचस्पति का कहना है कि कलि संवत ३०४२ से विक्रमाब्द शुरू हुआ।

विक्रम ने शिव के शत्रु अगस्तिन को, जब वह दक्षिण का, सिंहल में अपने को, ६ पुत्रों का संहार बताया था। सिंहल के अभिलेख पुरुष संहार लिखते हैं, राजधानी का ओजैन. आगस्तिन संत २७ में शासक था।

ज्योतिर्विदाभरण में भी - "मेरुक्रम दैत्यारि पति शत्रेत्रयं जित्वा गृहाब्धौ ब्रह्मविद्यामकं।"

- दूसरा अंतरङ्ग के पास एक शिलालेख राजा तरङ्गिन का सं. १३२ विक्रमी का है।

- जिस तरङ्गिणी का, काश्मीरक में कुछ दर्शन तात्पर्यों के हैं। लोकप्रिय हैं, जो संवत ८३ विक्रमी का है, पर लेख (लिखित) स्मृति पर में लिखा है।

ओम्.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किरम कागज़ मय नाप व तौल
Design of paper together
with size and weight. } _____

कीमत Cost _____

बेशगी Advance _____

प्रूफ़ चाहिये या नहीं
Proof wanted
or not? } _____

ता० प्रूफ़ भेजने की
Date on which the
Proof required. } _____

कब तक चाहिये
Date when
required. } _____

किस तरह फ़ार्म भेजे जावें
How the work may be
despatched } _____

हस्ताक्षर फ़ार्म छपाने वाले के
Signature of customer } _____

_____

ता० Date _____

- एशिया और उत्तर अमेरिका में 10 करोड़ वर्ष पूर्व से 10 लाख वर्ष पूर्व तक एक से जन्तु होते थे। आदम मानव दुरंगी, घोड़े, ऊँट, सांभर, जिराफ़ 2" घोड़े से 40 लाख वर्ष तक के समय में।
(लेकिन ये और ऐसे ही और भी कई हैं।)

उ. अमेरिका के कुछ कब्रिस्तानों में डेढ़ से 2½ फुट तक लम्बे हड्डियों के और कोई घोड़ा तक नहीं, उठा ले जाते थे। 5 करोड़ वर्ष पूर्व।
कि हिप्पेरियन। (By L. R. Brightwell F.Z.S. in the Miracle of Life P. 54.) इनके दर्शन की (कल्पना)

यूरोप तथा अन्य भी वर्षों से लिये लाखों करोड़ों

40 करोड़ वर्ष पूर्व tropical जलवायु उत्तर दक्षिण में था। इस लिये शिवालिक से पाती दक्षिण पूर्व की ओर आगे, ऐसा fossils से लक्षित हुआ है। (दुरंगी का दूसरा उदाहरण भी) इसके बाद सबसे पुराने मानव life का देखा जाकर मिला है। कि ऐसा ही परिवर्तन चीन में हुआ। किंतु उसका पश्चिम और दक्षिण से आने वालों से लिये बाधा खड़ी हुई थी। शायद तिब्बत से हुए आए और इन्हें से इसका पैदा हुआ-
लैन और गोबर Neanderthals हैं।

- मनुष्य कृत तालाब व हाथी की हड्डी से अधिक प्राचीन युग के प्राप्त
दो एशें (9 करोड़ वर्ष) में मिले हैं और आश्चर्यजनक है कि
वे उससे काफी पहले के बने हुए हैं, क्योंकि जहां वे मिले हैं, वहां
वे किसी कारण या प्रलय द्वारा बहा दी लाए गए हैं। उस पुराने
युग में इतनी उच्चकोटि के Fossils का मिलना कठिन
कार्य है।
पूर्वी अफ्रीका में अधिक उन्नत और विकसित मानव अवशेष मिले हैं।
आस्ट्रेलिया के आदिम निवासी सिडनी से मिलते हुए हैं।
P.T.O.

जब भैंसे, हाथी आदि 20-30 करोड़ वर्ष पूर्व तक के बचे हैं तो मनुष्य क्यों न बच सकते। - मांसाहारियों से ही जानवर और दांत Apes के होने का कारण। इसीलिए वे पेड़ों पर बने हुए हैं।
गलत है।

(दूसरे शिशुओं के साथ ...)

(दूसरे शिशुओं के साथ) आधुनिक मनुष्य आस्ट्रेलिड से अधिक मिलता था। कपाल, दांत आदि, जो पैलेस्टाइन में मिले हैं, वे अधिक पुरातन हैं। खोपड़ी की हड्डियां आधुनिक मनुष्य के विकास चिन्ह हैं।

- जिसे पैलेस्टाइन का स्किंग मैन भी कहा जाता है और अब आज तक पुरातन मानव माना जाता है। p. 306 The Miracle of Life.
- ओफिसियम के फॉसिल मानवेमिन पुरा के शिखाकृति में भी मिले हैं और 2 करोड़ वर्ष पूर्व के फॉसिल्स का विचार था कि ये Missing Link सबसे पुराने अफ्रीका के कपि पाए जाते हैं, अतः पुरातन मानव खोपड़ियां बड़ी हुई होनी चाहिये। इसी चीज़ का समर्थन बड़ी पाए गए फॉसिल्स से होता है। इसिए के फ्यूस और द. अफ्रिका में आस्ट्रेलोपिथिकस और अन्य फॉसिल्स के जो कंकाल मिले हैं, अधिक से अधिक उन्नत हुए मानव पूर्वज मानते हैं।

पैकिंगमैन और पिल्टडाउन एक और मिले फॉसिल्स मिलते हैं - इनमें कपाल, दांतों का - दूसरे आधुनिक मनुष्य के - दांतों, पिल्ट. हड्डी। पैकिंगमैन की लकड़ी कोयले और चकमक (फ्लिंट) के औजार मिलते थे। यह कपाल अधिकता था। दूसरे वैज्ञानिकों ने जबड़े की बनावट को देखकर बताया कि यह चिम्पांजी का था।

- जावा मानव के कंकाल के अधिक नमूने सदाबहार के मध्य में मिले हैं। जर्मनी, बेल्जियम, फ्रांस, स्पेन, इंग्लैंड, ऑस्ट्रिया, हंगरी आदि में मिले हैं। पूर्वी कपि की अवशेष मानव, इटली व ग्रीस आदि में मिले हैं। पूर्वी कपि की अनेक कड़ियां। अफ्रीका के अंतर्गत मिले हैं। पुराने मानव के अंगों को पूर्वज मानते हैं।
- जावा मानव के अंगों में खोपड़ी अधिक है। यह कपाल और मस्तिष्क के आकार का है और ओलेन्थ्रोपस (आधुनिक) मानव से मिलता है।
- सिंधुघाटी के दो स्थलों में Mount Carmel की गुफाओं में (सन् १९३३ में) जो अवशेष कंकाल मिले हैं, उन में अफ्रीकी कपि के फॉसिल्स और ओलेन्थ्रोपस - A सामान्य विशेषताएं हैं। अतः ओलेन्थ्रोपस आस्ट्रेलोपिथ से पिछले क्रम का पहले के हैं।

OM.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किरम कागज मय नाप व तौल)
Design of paper together with size and weight. } _____

कीमत Cost _____

बेशगी Advance _____

प्रूफ चाहिये या नहीं)
Proof wanted or not? } _____

ता० प्रूफ भेजने की)
Date on which the Proof required. } _____

कब तक चाहिये)
Date when required. } _____

किस तरह फ़ार्म भेजे जावें)
How the work may be despatched } _____

हस्ताक्षर फ़ार्म छपाने वाले के)
Signature of customer } _____

ता० Date _____

Immigrations

सम्भवतः पापी के दक्षिण से आए हुए।

- एक अद्भुत प्राचीन 'पाना' हिंगने मनुष्यों की हुई। ये पश्चिमी अफ्रिका से ले जाए गए। अब्राहम ने इन्हें दास बनाया।

किसी जाति, समाज, संस्कृति की

- अनेक युद्ध; जातियाँ - सांवला रंग, लंबे बाल, मोटे होंठ, ये एथियोपिक आर्य, इस्लाम, जावा, आस्ट्रेलिया तक (पहाड़ी आदिवासी) आए थे। आज से 11 लाख वर्ष पूर्व। इसी काल में इन जातियों की एक नई उन्नत पूर्वी लिटकेरिक आर्य अफ्रीकी जाति भी बढ़ चली,

- इसके कई समूह एशिया या इंडिड जाति की बढ़ चली, ये गेंहुआ रंग के थे, मोनु इन में इनकी जातियों का मिश्रण था। पहले ये दूसरे लोग आकर बसते थे, लिन्न और चेक स्लोवाकिया की सभ्यता इन्हीं की थी। यही दोमा मलय तक फैली और फिर प्रशान्त के द्वीपों में पोलेनेशियन के साथ। इन्हीं को एक लड़ी दूसरी (या पोलिनेशियन) आदि दूसरी धारा में यह और स्पेन तथा अमेरिका व हिन्दुस्तान तक फैली। संस्कृत संस्कृति की हो गई थी।

- मंगोल जातियाँ चीन थम पुरुष के आस पास एक लाख ओर्दस महस्थैव पार को बीरिंग तक उत्तर चीन में, दूसरी ओर इंगारी, लेपलैंड, फिन बैंड और अमेरी का तक, एक बाल्टिक राज्य व योरोपीय रूस, स्पेन। मेक्सिको सातवीं में हुआ। योरोप में पशुपालन व कृषि का प्रचार चीन से हुआ। यह कई आस के उत्तर पश्चिम से हुआ था।

- सिंधिया में शैव। पिता का जत्थे के पुरुष को कहते हैं।

गायत्री छन्द - आसी आस्ये २४. ४-४ बेटे ४८ तक

	सं.	उत्तर	अनु.	दृष्टे	प.	त्रिकु.	जगती
	२४.	२८.	३२.	३६.	४०.	४४.	४८
दैवी	१.	२.	३.	४.	५.	६.	७.
आसुरी.	१५.	१४.	१३.	१२.	११.	१०.	९.
प्राजापत्य.	८	१२.	१६.	२०.	२४.	२८.	३२.
याजुषी.	६.	७.	८.	९.	१०.	११.	१२
साम्नी.	१२.	१४.	१६.	१८.	२०.	२२.	२४
आर्ची	१८.	२१.	२४.	२७.	३०.	३३.	३६
छान्दसी.	३६.	४२.	४८.	५४.	६०.	६६.	७२

पिङ्गल छन्द. सूत्र खण्ड ३. देवताओं के लिये अ. ४. मं. १० शु. यजु २१. १२

कुछ छन्द नये चाहिये हैं।

यज्ञ के बनाए जाने आदि से, ऋषियों ने चाक्षुष मन्वन्तर में

ऋ. अ १. अध्या २ वर्ग २. मं. ६.

दर्शपूर्णमास - अग्नेय कपालों में ओदन पकाये। शु. यजु १.१.

कुशाओं से दूध छाने।

पूर्वकाल में इन्द्र ने एक वेद में विभाग करने की अभिलाषा

प्रगट की। शु. यजु. १. ४. १३ (२. ३. ३६)

तुझे दे, [illegible] (लक्षण)

— पहले किसी हेतु से डरे हुए अग्नि ने जल में प्रवेश किया।

फिर देवताओं ने उसे दूध का ग्रहण किया। वरुण अग्नि ने

जल में वीर्य छोड़ा, जिस से स्तिन, घृत और एकत-त्रि

तीन पुत्र हुए। शत. १. २. ३. १. तब से यज्ञ में इन तीन

देवताओं के नाम पर जल छोड़ा जाने लगा। यजु-१. ८. २३

— प्रजापति ने पुत्र देव और असुरों में स्पर्धा (लड़ाई) हुई। देव

हार गए, तब असुरों ने अग्नि से कहा। देवों ने वामन रूप

विष्णु को आगे कर असुरों से अपने लिये ३ अग्नि मांगी।

असुरों ने तिरस्कार पूर्वक कहा कि जितने भूभाग में विष्णु

शयन करे वह आप लोगों का हो। देवों ने कहा हमें

इतना ही बहुत है और विष्णु को पूर्व में सुला दिया।

वह अग्नि वैष्णवी कहलाई। शत. १. २. ५. १-१०.

पूर्व काल में जब देवासुरसंग्राम हुआ तब देवताओं ने मंत्रणा की कि इस भूमि का जो दैवयजन स्थल है, उसे चन्द्रमा में स्थापित कर लो। तदनुसार जब वह चन्द्रमा में स्थापित हो गया उसके पश्चात् यह वेदि स्वधा में स्थापित हो।

शत. १.२.५.१८ मनु. २.६।२८.

यह ही वेदी है जहां पर पवित्र में बनाने का विधान है, जिस के लिये 'पुवपतये स्वाहा' व पुवन पतये स्वाहा' दो आहुतियां दी जाती हैं। मनु. २. १२.

इस पर २० — पहले अग्नि के आतः वसन्त में प्रवेश करते हुए। उसे हुतभुक् हुई अग्नि ने जल में प्रवेश किया। कि देवताओं द्वारा ला कर अग्नि को स्थापित होने पर उस ने कहा कि इन दो चारुओं के लिये भी वरदान हो। तब से ये अग्नि के आहुति हुए। (कुछ पंक्तियां अस्पष्ट हैं)

शत. १.३.३.१३ — १६ अग्नि. सहपति दक्षिण, उत्तर वायव्य

अथ चौक सब नक्षत्रों का प्राय: २६ वर्ष में घूमता है, दो चौकड़ी अर्थात् ८ चक्रों सब अग्नि अपने आहुतियों के साथ जले हैं।

सूर्य-स्वयं भू. मुनु सं. ३.८.१७

मनु पहले निमुक में हुते थे, कि स्वधा सं (मनु २.१७.३०

ऋतु-लि-वसन्त, ग्रीष्म-ग्रीक्ष, स्वधा-शरद. धो-३०

-हेमन्त, मन्यु-शिशिर. मनु. २.१७.३२.

मौ: पृथिव, मार्ताण्डी. ६६ - एक ही माता पुत्र। मनु का

ई.पू. १८-१९. प्राचीन दिशायें।

मण (ब्रह्म क्षत्र - ऐंद्राग्नि, त्रिष्टुप मनुओं के लिये पञ्च-

वि वृत। बन २ में - विश्वेदेवों। ३.२१.१५ अग्नि दो

उ.वि के में मेधातिथि। १६. चित्तावसु ले चले गा जाने

शत्त हिस। १८

ओ३म्.

DAYANAND YANTRALAYA, AJMER.

ORDER FORM.

नाम Name _____

पूरा पता Full address _____

काम Work _____

तादाद Quantity _____

नाप Size _____

किस्म कागज़ मय नाप व तौल Design of paper together with size and weight. _____

क़ीमत Cost _____

बेशगी Advance _____

प्रूफ़ चाहिये या नहीं Proof wanted or not? _____

ता० प्रूफ़ भेजने की Date on which the Proof required. _____

कब तक चाहिये Date when required. _____

किस तरह फ़ार्म भेजे जावें How the work may be despatched _____

हस्ताक्षर फ़ार्म छपाने वाले के Signature of customer _____

ता० Date _____